

# हनुमान्नाटक भाषा

अर्थात्

## श्रीवरविलास

जिसमें

श्रीरामचन्द्रजी की जन्म से लेकर राजगद्दी पर्य्यन्त कथायें अतिमनोहर दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैयादि छन्दों में वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजी श्रीदूलहसिंहजी साहब की आज्ञानुसार रतलामनिवासि महन्त श्रीरामाजी चतुरदास ने काव्यानुरागियों [illegible] रचना किया ॥

चौथी बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा

सन् १९१३ ई० ॥



८ जुज ४ वर्क

# अथ हनुमन्नाटक भाषा का सूचीपत्र।

इति ॥



श्रीमतेनिम्बार्काय नमः ॥

# अथ हनुमान्नाटक भाषा

अर्थात्

# श्रीवरविलासः प्रारभ्यते ॥



शालिनीछन्द ॥

वन्दे रामं कोटिकामाभिगमं । मेघश्यामं सर्वदापूर्णकामं ॥ गोविन्दोहंसच्चिदानन्दकन्दं । देवाधीशंजानकीशंजनेशं १ ॥ अनुष्टुप्छन्द ॥ श्रीवरस्यविलासोयं ग्रन्थोरामयशोऽङ्कितः ॥ हनुमन्नाटकच्छायां·गृहीत्वा तन्यते मया २॥ अथ ग्रन्थावतरणिका ॥ शतगुनीस बत्तीस सह १६३२ मेचक श्रावणमास ॥ बुधबासर एकादशी, श्रीबरबदत विलास ३ पाय कछुक परसंग मम, आगमपुर पिपलोद ॥ दूलह नृप दीन्हों हुकुम, सुनि मन भयो प्रमोद ४ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ एक समै पिपलोदपुरी प्रति गौन गोविन्द तुरन्त तहां है । मन्दिर में गणनायकके निज मन्त्रिनयुक्त जनेशो जहां है ॥ नाटककी चरचानि चलाय सुनाय दिये बर बैन वहां है । औ नृप दूलहकी उपमा सम पावत सो नृप कौन कहां है ५ श्रीमत रावत साहब दूलह हेरनमें दरशैं नितु हारक । विप्र गोविन्द दई उन आय सहीय कृपा-

टनकी उदघाटक ॥ सोहत नाटक रत्नमें मणिमाणिक सों हनुमान सुनाटक। ग्रन्थ नवीन बनै उहि पन्थ न श्रोणपरैं अत्र ओघ उचाटक ६ ॥ दोहाछन्द ॥ कारक जगमें मताततै, समझैं सकल रहेश ॥ फाटक हियरेके खुलैं, नाटक पराडनिशेश ७ आयसु पति पिपलोदकी, लीन्हीं शीश चढ़ाय ॥ पुर शोभा पुरपतिप्रभा, कछु बरणत चितचाय ८ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ थानक थानक होत कथानक व नक मङ्गल आनक बाजैं। मन्दिर मन्दिर अन्दर सुन्दर सेवन देव महोत्सवछाजैं ॥ गेहन गेह सनेह सनै तुलसी थिरथान बिशेष बिराजैं। मोद प्रमोद बिनोद भरी पिपलोदपुरी भुवि पै भल भ्राजैं ६ ॥ अथ नृपतिवर्णन अमृतध्वनीछन्द ॥ लइजय बल्लि मतल्लिमहँ बंश बल्लिरावल्ल। दुल्लह रावत खुल्लि तित मल्ल बिद्दल्लीढल्ल ॥ ढल्लल्लखि प्रतिमल्लल्लह नहभल्लल्लजजित। फुल्लल्लोक बिफुल्लल्लोयन बुल्लल्लवतित ॥ तुल्लल्लगाकि अतुलल्लल्लिय जसमुल्लल्लयुवय ॥ दुल्लल्लखत न भुल्लल्लगत प्रबल्लल्लहिजय १० ॥ अथ सिंहआखेटक बर्णन ॥ लखिबे में नवहत्थके, पञ्चानन बड़मत्थ। लत्थ पत्थ लोहन किये, दूलह नृप दुइहत्थ ॥ हत्थित्थटिमहँ मत्थत्थितदुइ चित्तत्थिरतुर। पंत्थत्तुबक अकत्थत्थिति समरत्थत्थलउर ॥ तत्थत्तित प्रहरत्तत्तकितकिजितत्तसनखि। कत्थत्तवन कब्बित्तथुइ सर्बत्तत्तवलखि ११॥ अथ गजबर्णन ॥ कटकटात अटकत नहीं, सोहत बारन शुद्ध। लखि कुञ्जर गलगुञ्जरत, उर उद्धत अबिरुद्ध ॥ रुद्धद्धुर अतिकुद्धत्तुर जुरियुद्धद्धरअट। धद्धद्धिन्ना धद्धद्धिन्ना धद्धद्धुवरध ॥ धद्धद्धाकट धद्धद्धाकट धद्धद्धाकट। धुद्धुद्धुधुकट धुद्धुद्धुधुकट धुद्धुद्धुधुकट १२ त्वरबच उचरत महावत मुरजबोलगलगज्ज। रावतदूलह करिनकर गिरिकज्जल छबिछज्ज ॥ छज्जच्छितिभा गज्जज्जल-

धर कज्जज्जयकर । झुञ्झञ्झुकिझुकिखिज्जिझ्झटिति सुलिज्ज-
ज्जशबर ॥ भज्जज्जवसुर गज्जज्जवशिर रज्जज्जिनधर । लज्जज्ज-
लधि निभज्जज्जडधि सलज्जज्जियत्वर १३ ॥ अथ हयशालावर्णन ॥
दिनदुलहा दुलहानृपति, यशजाहिर दशदिश्श। होतरहतहयशा-
लजिहिं, संगीतकअहनिश्श ॥ निस्ससस्सरिगम धस्ससस्सरिगम प-
स्ससस्सरिगम । गस्ससस्सरिगम मस्ससस्सरिगम रस्ससस्सरिगम ॥ तत्त
थ्यइपुनि तत्तथ्यइपुनि तत्तथ्यइतिन । अस्ससस्सकल नृपस्ससस्सबल
बिलस्ससस्सवदिन १४ ॥ राजकुमारवर्णन दोहाछन्द ॥ भावत मनरा-
वत कुँवर, उपजावत आनन्द ॥ तीनिहुँमनु त्रिभुवन तिलक, उपमा
अखिल अमन्द १५ कलित केसरी केसरी, सोहत संदुपम शेष ॥
हिम्मत हिय किम्मतकरन, सकुचत सुकबिअशेष १६ ॥ सोरठाछन्द ॥
कुँवरकनीयरसाल, राजत अति रघुनाथहरि ॥ तीनहुँ गुणगणमाल,
चितचीनहु सब सुवरनर ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेग्रन्थावतरणिका
वर्णनन्नामप्रथमोल्लासः ॥ १ ॥

तदुक्तंनाटिकावतारे ॥ अष्टाभिर्दशभिर्वापि नान्दीद्वादशभिःपदैः ।
आशीर्नमस्क्रियावस्तुनिर्देशोवापितन्मुखम् ॥ इति नान्दीमङ्गलवचनं
दोहाछन्द ॥ रावत नरपति हुकुमगहि, धिय धरि अमित हुलास ॥ टी-
कमसुत गोबिन्दद्विज, श्रीबरबदतबिलास १ ॥ मनोहरछन्द ॥ मङ्गल
निधान कलिकिल्बिषहरनहार, पावन पुरुषार्थनको पावनप्रकाम है ।
नान्दीसत्वर परनपद प्रापतिको प्रस्थितजे, मनुज मुमुक्षु राहखर्च
अभिराम है ॥ कबिबरबैन बिसरामधाम एकवही, सज्जनको जीवन
जरूर बसुयाम है । धर्मबृक्ष बीजहोहु संकल बिभूतिप्रद, रावरसदैव
गुणग्राम रामनाम है २ कमला कुचनपत्र रचना बिचित्ररची, पकरी

की मुद्रामञ्जु अङ्कित हृदय है। देवसर्वजगदीश मधूवधूवक्त्रकञ्ज, मुद्रित करनहेतु इन्दुसों उदयहै ॥ क्रीड़ाकाज कियो क्रोडकलित कलेवरहै, द्विजचन्द जैसी श्वेतदंष्ट्र समुदयहै। तापैदिपै भूमिकदी प्रलय पयोधि सुस्ताथ मसालसत ऐसोराम सोसुदयहै ३ शैवशिव धारे ब्रह्म बदत बेदान्तवारे, बौद्धमतवारे बुद्ध बुद्धि में बिचारे हैं। कर्त्ताकहैं नैयायिक जैनी अरहन्तरटैं, मीमांसक कर्म एक ईश्वर उचारे हैं ॥ गावत गोविन्दहोउ वाञ्छितफलद प्रभु, रैन दिन रावरे सुधारे काज सारे हैं। वह है त्रिलोकीनाथ सीतानाथ रघुनाथ, न्यारे न्यारे लोक न्यारे रूपते निहारे हैं ४ राम वह रावणारि दशरथसूनु लसैं, लक्ष्मणं अग्रजात सुगुन समेत है। पूज्यपृष्ठ पूर्णअब्धि अन्त लौंप्रतापजासु, सकल सुहाग सिद्धि विद्याको निकेतहै ॥ आनँदको कन्द कलिकिल्बिष पटलध्वंसि, सौम्यदेव सेवातम सर्वको संकेतहै। त्रिभुवन शरण अशरणको शरण सदा, नित्यनिकलङ्कताहि प्रणवों सहेत है ५ अवधपुरी को भूप दशरथ होतभयो, सूर्यवंश केतुशूर शत्रुन सँहारी है। वली वीर बिक्रमी करीही पुत्रइष्टि तानें, नारायण तबैं तासु आश निरधारी है ॥ दुष्ट दैत्य कष्टभूरि भारभयो भूतलपै, तिनके सँहारहेतु चार मूर्त्तिधारी है। जेष्ठ श्रेष्ठ राम लषण भरतरु शत्रुहन, चारों भ्रात मात तात आयसानुसारी है ६ असुरन भूरि भयभीत मुनि बिश्वामित्र, अवध अधीश अङ्गजात युग याचेहैं। क्षौनिप यशस्वी निज चित्तमें दुचित्तहोय, दीन्हे सुत दोय राम लक्षमण राचे हैं ॥ सुन्दासुर सुन्दरी प्रहारी ताटकाभिधान, कौशिकहुजानी नृप बालशूर सांचे हैं। विद्याहृद्य दीनीसद्य अति अनवद्यतदा, कढ़िगे समस्तजे मनोर्थमन काचेहैं ७॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ कौशिकनन्दन आश्रम आय कियो मखनूरन आप अबै हैं। धूम

निहारत आसुर ओघ सुबाहु मारीचिसमेत सबै हैं ॥ श्रीरघुनन्दन कन्द कियो क्षण छांड़ि मरीचि सुजान जबै हैं। कारजलैन कछूक-रयो जिहिते तिहिको तजिदीन तबै हैं ८ ॥ मनोहरछन्द ॥ सीताको स्वयंबर सुनत श्रौन कियोगौन, मारगमें शिलारूप अहल्या उधारीहै। जनकपुरी में जाय सबै सतकार पाय, महत महीपनमें पाये शोभ भारीहै ॥ गावत गोविन्दलखि कोशलकिशोर छबि, चित्रसे भये हैं यत्र तत्र नर नारीहैं। इन्द्रहै कि इन्दुहै कि दिपत दिनेन्द्र किधौं, दशरथनन्द रामचन्द्र बलिहारी हैं ९ ॥ दोहाछन्द ॥ निरखत निमि नृपनन्दनी, उर उमँग्यो आनन्द ॥ निज मनमधि संकलप कलु, करनलगी स्वच्छन्द १० ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ कच्छप पीठ कठोर यहै शिवचाप है। कोमल मूरति श्रीरघुनन्दन आपहै ॥ इनते होय अधिज्य कौन यह बात है। परहां। प्रणदारुण अति कीन अहह तुम तातहै ११ ॥ मनोहरछन्द ॥ लक्ष्मणलाय लक्षणते कहत राम, पेखहु पृथीप पुञ्ज पुञ्ज प्रकटाने हैं। जम्बूद्वीप आदि द्वीप द्वीप के महीप आये, कन्या अरु कीर्तिलाभ मानत महानहै ॥ बङ्कितकियोऊहु टङ्कित महेशचाप, नमितकियो न कियो उत्थापितथानहै। चढ़ी नाकबान कछु कढ़ीना जबानमुख, मेरे जान बीरताबिहीन भो जहान है १२ ॥ दोहाछन्द ॥ किय अनन्द रघुनन्दहिय, निज भुज बल बरणन्त ॥ प्रौढ़ी बचन प्रत्यक्षपदि, लच्छ बच्छ हुलसन्त १३ ॥ षट्पदछन्द ॥ बहुत कहनमें कहा, नाथ सच बचन उचारत। दास राधरो खास, लक्षमणप्रिय यह भारत ॥ गिनौं न गिरिवर मेरु, प्रमुख धनुकीका गिनती। अतिशय जीर्ण पिनाक, करौं प्रभुते यह बिनती ॥ मुहिंहोय हुकम मम लखहु बल, कौन कौन कौतुक करौं। धकिधकै मरोरौं मूलजिमि, गहि शतयोजन अनुसरौं १४ ॥

सोरठाछन्द ॥ सुबचनसुनि श्रीराम, नीति निलय निज अनुजके ॥
रघुकुलमणि गुणग्राम, किय निषेध हगसैनकरि ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामलक्ष्मणसंवादो
नामद्वितीयोल्लासः॥ २ ॥

दोहाछन्द ॥ लाग्यो रावण पुरोहित, बतरावन निमिनाथ ॥ नित्प्रति दुहिता रावरी, चितचाहत दशमाथ १ ॥मनोहरछन्द॥ देनी है अवश्य मयदुहिता कहूं न कहूं, लेनीचहै लङ्काधीश चितमें विचारिये। जाके गुणगावें महामुनि मरिच्यादि प्राच्य, धरनीकी रेणुते बिशेष भियधारिये ॥ परमप्रचण्ड दोर्दण्डन प्रतापनते, त्रिभुवन लोक लोक मच्छरनिहारिये। ऐसे अवलम्ब आहि कीजिये बिलम्ब नाहिं, अद्य अबिलम्ब आप कारज सुधारिये २ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ असुर पुरोहित पठत राम प्रति बैनहै। भियधारी लङ्काधिराज सिय लैनहै ॥ चितचाहत जो श्रेय निजेच्छा छण्डिये। परहां। त्रिभुवन बिजयी संग बैर नहिं मण्डिये ३ बदत बचन बैदेह पुरोहित पेखिये। यह माहेश्वर धनुष दृष्टिदे देखिये ॥ करिहै याहि अधिज्य सुता सो पायहै। परहां। अपर सबै खिसियाय आय जिमि जायहै ४ पढ़त पुरोहित सुनो जनक महराजजू। अवलोकत भुज बीस कितक यह काजजू ॥ क्षणमधि चूरण करत धरत नहिं धीरहै। परहां। निज गुरु शिवधनु हेरि सुबिकल शरीरहै ५ बिहँसि बदत मिथिलेश पुरोहित जू रहो। शम्भु बास कैलास लियोकर किमि कहो ॥ गृह उखेरती बेर कियो अबिबेक है। परहां। अब भय क्यों गुरुभाव गही धनुटेकहै ६ ॥ दोहाछन्द ॥ जिमि लीनो कैलास करि, तिमि धनु कीजै सज्य ॥ नातर निलय सिधाइये, उर आशय संत्यज्य ७ इमि कछु बचन बिदेह बदि, निज उर करत बिचार॥ अब आगे ह्वैहै

कहा, समझि परत नहिं सार ८ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ क्षुद्र सकल क्षिति-पाल सुअखिल असक्त है ॥ अष्टयाम दशग्रीव ईश अनुरक्त है ॥ धनुपारोपण शुल्क सुल्क जाहिर कियो। परहां। कसहू है सिय हाय कहत नृप भरि हियो ९ ॥ श्रीबैदेहीवाक्यं ॥ कोमल मूरति को-शलराज किशोर है। शम्भु शरासन कमठ सुपृष्ठ कठोर है ॥ केहि विधि होय अधिज्य असम्भव बात है। परहां। अति दारुण प्रण कियो अहहु तुम तात है १० ॥ दोहाछन्द ॥ बैदेही बर बचन सुनि, नीर भरे नृप नैन ॥ तबै पुरोहित क्रोध करि, कहन लग्यो कछु बैन ११ ॥ मत्तगजेन्द्रछन्द ॥ संयुत शम्भु शिवागणनायक स्कन्द ननन्दि गिरिन्द्रउठायो। बिक्रम बेश पराक्रम मुञ्ज दशाननको क्षितिछोरन छायो ॥ भूप बिदेह बिचार करौ हिय चाप चढ़ावन वाहि बतायो। आवत मोहिं अचम्भ महा इहिमें तुमका पुरुषारथ पायो १२ ॥ कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ उपरोहित आक्षेपकरि, उरउमंग अधिकाय ॥ जनक सुनावत सब नृपन, तबं निज भुजाउठाय १३ ॥ जनकउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ शम्भुशरासन मध्य महागुरुताराई। बीस भुजनकी शक्ति जहां कुण्ठितभई ॥ ऐसेको इत आहि याहि सज्जितकरे। पर-हां। त्रिभुवन बिजय बिभूति सीय ताको बरै १४ ॥ कविरुवाच ॥ सोरठाछन्द ॥ सुनिबिदेह नृपबोल, श्रीरघुनन्दन उमँगिउर ॥ लखत सुलोचन लोल, जटाजूट ग्रन्थीदई ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेपुरोहित विदेहसंवादोनामतृतीयोल्लासः ॥ ३ ॥

तदुक्तंवसन्तराजे ॥ चक्षुर्वामंमृगदृशोजयंकारिभृशंत्वरा तदेवपुरुषस्यारात्स्फुरितंभयशंसनमिति १ ॥ कविरुवाच ॥ घनाक्षरीछन्द ॥ पुल-कित परमस्मेर सहित मुखारविन्द, सियाके कपोल में बिलोकत

हैं बारबार। कोणप कदम्बन में होयरह्यो कोलाहल, तिनके प्रपञ्च बोल श्रवणनि धारधार॥ पञ्चानन तुल्य आप पञ्चानन बैनसुनि, मञ्चते उतरि पञ्चानन को धनुनिहार॥ आनँद अखूट जोर जटाजूट ग्रन्थिदई, लोगनकी लूटिलई शोभा शुचि सारसार १॥ दोहाछन्द॥ बामदेव कोदण्ड दृढ़, जब करलीन्हो राम॥ जामदग्नि जनकात्मजा, तब फरके दृगबाम २ करनलगे धनुसज्ज तब, भ्राता लक्ष्मण तास॥ उरबी अहि कमठादिको, देनलगे बिश्वास ३॥ रोलाछन्द॥ थिराहूजिये थिराधराधारिये भुजंगम। महि अहिधारहू कमठ राम कर शिवधनु संगम॥ दिक्कुञ्जर दृढ़होय त्रितय धारहु इहि अवसर। सज्ज करत हरचाप आप रघुबंश बिभाकर ४॥ षट्पदछन्द॥ भूमी भई बिनम्र, नम्र फणिपति फणमण्डल। भमो मेचकित भूरि, बुद्धि बिपति आखण्डल॥ किलमिलात किलकमठ, क्षोभ पायो बरुणालय। दिग्गज दिशिभट सहित, भये कायर करुणालय॥ बहु बार बार बृंहितकरत, धराधार धूजनलगे। जब सज्ज कियो शिवधनुष, तब इमि लक्ष्मण कूजन लगे ५॥ मनोहरछन्द॥ इतमैं उठायो धनु तितै बिश्वामित्र तनु, पुलकि उठ्यो है अङ्ग अङ्ग प्रेम पाथ है। इत में लचायो रघुनन्दन महेशचाप, तितैन में देश देश भूपनके माथ है॥ इतमें भ्रमायो भूरि कोशलकिशोर यह, संशय गँवायो तितै निमिपुरनाथ है। कारमुक खैंचतमें खैंच्यो मन मैथिली को, जामदग्नि मान औ कमानैं भ्रानसाथ है ६॥ षट्पदछन्द॥ जब जारोयण किये कर्णलौं खैंचतशङ्कर। तबै त्रिपुरतिय तोम भीमभासंत भयङ्कर॥ कर्णोत्पल ग्रन्थी जुतिनौंकी भ्रष्ट होत है। सदा लगाये रहत सुनत निज श्रोत्रश्रोंतहै॥ जब जा उतारि त्रिपुरारि तित आस्फालन धनु अनुसरैं। तब है निराश निशिचरबधू आस्फोटन

कङ्कनकरैं ७ ॥ दोहा ॥ उग्रदेव अत्युग्रधनु, उत्थापनते काम ॥ किहि कारण भञ्जन कियो, गुणगाहक श्रीराम ८ ॥ मनोहरछन्द ॥ ब्रह्मवध पातक समेत मन्मथारि अरु मातृबधकारि क्षत्रियारि जियजानिकै। इन द्वैके संगरयो दोष संसरगलयो, अपर अनेक अघखानि उर आनिकै ॥ गावत गोविंद गिरा सकल सुनानसुनो, महत महेश धनु यह मनमानिकै। पापनकी भई हान ताते ताने तजे प्रान, राम पाणिपद्म पुण्य तीरथ पिछानिकै ९ टूटतहि भीमधनु कीन्हो है कठोरनाद, विस्मय भयो है ठौरठौर ठामठामहै। रविरथ बाजि राजि ऊवट गमन कियो, शम्भुशिरकम्प धुरधूज्यो धौलधाम है ॥ दिग्गज गिरन तथा चलन कुलाद्रिनको, अर्णव मिलन सप्तऊरधं तमामहै। मैथिलीमदन मदअन्धन कदन ओघ, आसुर अदन शूर सदनभिरामहै १० सष्टाके बरिष्टवर अष्टहू श्रवणरुके, अष्टमूर्त्ति मूर्त्ति अष्ट कष्टभयोभारी है। मुखरित अष्ट दिशा दलन कुलाद्रि अष्ट, अष्ट कुली नागपांति बधिर निहारीहै ॥ लक्षमण भ्रात अतिस्वच्छ मन लक्षलाय, गोविंद प्रत्यक्ष दर्श बदैं धर्मधारी है। तोर दोरदण्ड जोर चण्डिकेशको प्रचण्ड, खण्डनकोदण्ड नाद चण्डता प्रचारीहै ११ टूटतधनुष महि मच्यो महाकोलाहल, निठुर निनाद लोक लोकनमें छायो है। श्रोणमुनि शब्दके अमर्षवश मूर्च्छितहै, अति अविलम्ब ध्यान अध्वधकि धायो है ॥ जानकी निमित्तजान जान की रखी न भान, भञ्जि भवचाप आप बीरब्द पायो है। क्रूर क्रोध अग्निपलै अग्नि सो निमग्न उर, निष्ठुरता मग्न जामदग्निमुनि आयो है १२ मस्तक मनोहर त्रिगजैंटोप कङ्कणत्र, पीठिपै निपङ्ग युग्म ख्यातखण्डखण्डहै। परमपवित्र भूति भूपितउरस्थलहै, मञ्जु मृगचर्म मुञ्जमेखला अखण्डहै ॥ वतन मजीठाङ्ग रञ्जित ललिततनु,

करमें धनुप अक्ष बलय घमण्डहै। दण्ड औ कमण्डलु ले उग्रअस्त्र मण्डलले, फरशा प्रचण्ड चण्ड चरित उदण्डहै १३ ॥ दोहाछन्द ॥ ब्रह्मसूत्र बायें कँधा, दक्षिणदिश धनुधार ॥ धर्मदीधिती सोमसम, जिमि अहि चन्दनलार १४ ॥ मनोहरछन्द ॥ जबते जनमलियो तबहीं ते ब्रह्मचर्य, शिलास्तम्भ जैसे भुजदण्ड भासमानहै। अ-ङ्कित ज्याघात पंक्ति सूचन करत यहै, वसुमति विजय प्रशस्ति फहरानहै ॥ बक्षस्थल प्रबल घनास्त्र शस्त्रघात किए, कठिनकठोर पै सुधारे धारवानहै। क्षत्रिय बन बारन विदारन करनहार, आयो जमदग्नि जायो जानत जहान है १५ मुदित समुद्र सप्त पुनि प्रति गालकहौं, अर्जुन सहस्रभुज दुष्ट दर्पदाव्यो है ॥ रेवातीर नीर के निरोधको करनहार, दोरदण्ड भुण्ड खण्ड खण्डन उद्धाव्योहै। गावत गोबिन्द ऐसे लक्ष्मण कहत राम, पितृबध पेखत अमर्ष उद-धाव्यो है। वही जामदग्नि यह जाने गुरुद्रोही जान, कठिन कु-ठारते कठोर कण्ठकाव्यो है १६ त्रिगुणित सातबेर क्षत्रिय समस्त केर, बसा मांस रुधिर सनान बहुबारहै। निधन बिधान चीन्ह परम प्रधान यह, तीय बृद्ध बाल नाहिं निर्दय निहारहै॥ राजनके कन्धकूट कोटि कोटि काटनमें, साठौं घरी आठौं पैर परम प्रचारहै। बारबार बदत धुरांक धिय धारधार, क्षत्रि क्षयकार घोरधार ये कुठारहै॥ १७॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकविटीका रामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेपरशुरामगमनंनामचतुर्थोल्लासः॥४॥

सोरठाछन्द ॥ कहत क्रोध करि बैन, परशुराम संशय सहित ॥ तोख्यो धनुप त्रिनैन, काल कलेवा कौन कहु १ ॥ षट्पदछन्द ॥ निज पति आयुध जानि, पार्बती पूजत जिहिं नित। बासुकि कञ्चुकलाइ, नन्दि सादर आच्छादित ॥ धनुष धनञ्जय तुल्य, त्रिपुरतामधि हुव इन्धन। मोहिं अछत द्वैटूक, करे कानेकहियेजन ॥ जब काहु न

उत्तरदियो तब, उर अमर्ष अतिशयपगे। फुरकन्त ओठपुट रक्त चप, रामहिंसन इणरनलगे २॥ मत्तगजेन्द्रछन्द॥ फुल्लित गल्ल करैं फुतकार प्रफुल्लन सापुट कोटर आयो। ओघ अहंकृति पावकपुञ्ज हलाहल घूमतितें प्रकटायो॥ अन्धसमान किये सबलोकन अम्बर लौं क्षितिछोरन छायो। लोयनलाल करालकिये ततकाल महाबिकराल लखायो ३॥ मनोहरछन्द॥ रे रे रे अरे रे राम तेरे ये समग्र काम, निजकुल कञ्जपै तुषार तोमतैसोहै। मोहिं महिं चान्यो नाहिं रञ्च डर आन्यो नाहिं, जान्यो ना जरूर जामदग्निमुनि जैसो है॥ कीनो है अकाण्डमें प्रचण्ड दोरदण्ड बल, खण्डनको दण्ड करि चण्डमान कैसो है। आडम्बर डिम्भते विख्यातभयो खण्ड खण्ड, मण्डल महीप में उदण्ड मण्ड ऐसो है ४॥ चन्द्रायणाछन्द॥ निखिल नरेन्द्रनिकाय कुमुदजिमि जानिये। तिनको मुद्रितकरन मिहिर मुहिं मानिये॥ कार्तबीर्यप्रति कढ़े यथा मम बोलहैं। परहां। सो सुनिलीजै राम श्रवण युग खोलहैं ५॥ दोहाछन्द॥ सहसबाहु नृपसैन्यसंह, हौंद्विबाहु दुजएक॥ प्रकटप्रभाकर पेखिहैं, तबमम संगरटेक ६ यथाकही तैसी करी, कार्तबीर्य के साथ॥ सो जानत सारोजगत, ममविक्रम रघुनाथ ७॥ मनोहरछन्द॥ कठिनस्वभाव मेरो जाहिर जगत बीच, बालबृद्ध तरुण तमाम तूर्ण मारे हैं। छाँड़यो नाहिं छौना नवसूतिका बिछौनाबीच, तिनके रुधिर सर्बपितृकाज सारे हैं॥ सप्तत्रय बेर क्षुद्र क्षत्रिय त्रियनकेर, गर्भथित अर्भन निकारि काटिडारे हैं। अहो अहो अहो महा आचरज आवतै है, कहो कहो कहो राम तुम क्यों बिसारे हैं ८ कालसा कराल क्रूर कठिन कुठार यह, कार्तबीर्य कण्ठ भुज छेदनमें दक्ष है। घर्षण केयूर मध्य मणिगण रणत्कार, घोर शोर सुनैं शत्रु त्रसित ततक्षहै॥ तेजकरि तुल्य दिपै द्वादश

दिवाकर सों, क्षत्रीगोत्र काज मलै पावक प्रत्यक्षहै। लक्षमण लाय लख लक्षमण अग्रजात, लक्ष लक्ष लक्ष बच्छ भक्षण विचक्ष है ९॥ षट्पदछन्द॥ सुनि सुनि बचन मुनीश, राम निज चेतसि चुनि चुनि। पुनि पुनि नयननिहारि, बैनबोले हिय गुनि गुनि॥ भुजबल बिदित न मोहिं, नाहिं शिवधनु प्रतापबल। रावर महिमा महा, कहा हौं जानिसकौं भल॥ करिये न क्रोध नाहक बिभो, धरिये धीरज धूवधिय। अज्ञात बालआचरण लखि, है प्रमुदित गुरुलोग जिय १०॥ दोहाछन्द॥ करकुठार यह कण्ठमम, करहु यथोचित सोय॥ रघुबंशिन को शूरपन, गो द्विजपै नहिं होय ११॥ मनोहरछन्द॥ लीजै सुनि विप्रवर्य हमको तिहारे संग, संगरुकी बातहू कियेते होत पापहै। सारेहीनबल हम तुम बलवाननके, शीशनि लसत यथा पत्रनपै छापहै॥ कैसे करिसकै कहौ रावरी बराबरी जु, भुजते भये हैं भूप ब्रह्ममुख जापहै। एकगुण संयुत धनुप धराधीशनको, नवगुणयुक्त ब्रह्मसूत्र लसै आपहै १२ चित्र भानुबंशजन्म क्षत्रिय कहावतहौं, श्रोत्रिय समस्त इभ्य अर्चन करतहौं। भगवत बिश्वामित्र महत अनुग्रहते, प्राप्त दिव्य अस्त्र पारधिय में धरतहौं॥ कोऊजन करौ यश अथवा कुयश करौ, हर्ष शोक नेक नाहिं रसना ररतहौं। धारतहौं शस्त्र शत्रु सघन सँहार काज, कालते डरौं न विप्रबालते डरतहौं १३॥ दोहाछन्द॥ परशुराम रघुराम मुख, निकसे सुनि बरबोल॥ तिनको कियो म तोल कछु, उचरनलगे अतोल १४ बिप्र बिप्रकहि बदत मुहिं, रेशठ बारम्बार। जाबिधिको मैं बिप्रहौं, सो सुनिलीजै सार १५॥ घनाक्षरीछन्द॥ क्रोधकरि जाने निज जननी प्रहारी पेख, क्षत्रिय बिहीन मही कीनी इकबीसबार। क्षत्र अस्त्रमध्वा सब स्वादमें

अभिज्ञ अति, कुलिश कठोर घोर कठिन कुठारधार॥ जाको बाण छिद्रमग भासैं क्रौंचपर्बतमें, हंसछलगिरैं अजों अस्थि अद्रिके अपार। ऐसो उग्र ओज उग्रदेव सो उदग्र अति, प्रलयअग्नि जैसो जामदग्नि भार्गवनिहार १६॥ षट्पदछन्द॥ क्षुभित निरखि भृगुनन्द, बचन रघुनन्द उचारत। त्रिभुवन तियमधि बीर, जनी जननी तव धारत॥ निजभुजबशी बिशाख, बिलखि मुख बीड़ापाई। असुत है मम उदर, उमा उरइच्छाआई। अतिधन्य मात अरु तात धन्य, बीर आप अतिधन्यहै। तिहुँकाल त्रिलोकी बीचकिहुँ, नहिं उपमा कछु अन्यहै १७॥ चन्द्रायणाछन्द॥ हारपरो गरमोर कि कठिन कुठारहै। कज्जल तिय चषबसौ कि जलकीधारहै॥ मुखलखिहौं संसार कि यमको मुखलखौं। परहां। बिप्रनपै बीरत्वपनौ कबहुँ न रखौं १८॥ दोहाछन्द॥ कहे राम अभिराम अति, अक्षर अखिल अमोल॥ तदपि अभ्यसूयासहित, बोलत भृगुपति बोल १९॥ किरीटीछन्द॥ सागुरगह्यो सब शंकरकेकर जीरनचाप पिनाक कहावत। टूटिरह्यो पहिले तिहिं तोरि प्रबीरनमें नहिं बीरसरावत॥ बैष्णवचाप हमारयहै करि सज्ज विकर्षण जो दरशावत। शूरसमग्रनकी गिनतीमधि तौ रघुनन्दन रामगिनावत २०॥ दोहाछन्द॥ भार्गवमुनि के बचनसुनि, भये चकितचित राम॥ इत पर्बत उत कूपहै, मिलत न कित बिश्राम २१ धनुषाकर्षन करनमें, बिप्रधर्षणाहोय॥ जो न करौं यह बाततौ, मिलत पराभवमोय २२॥ षट्पदछन्द॥ अद्य प्रभृति ममभाव, बिप्र नहिं परशुराम है। पुत्र पौत्र रघुबंश, भूप नहिं यहै रामहै॥ बीर कहौ अथवा, कुबीर कहियो समग्रजन। अब अवश्य यह बात, धारिलीनी मेरे मन॥ सब सुजन कुजन मिलि भल कहौ, किंबा करिलीजै हँसी। द्विजदुष्टप्रबल मददमन, हित पीताम्बर कम्मर

कसी २३ इमिकरि मनसि बिचार, चारु रघुबंश बिभूषण। पुनरपि प्रवचन पठत, शान्तिमय बिरहित दूषण॥ अर्णवमित भूमात्र, जीति इक्कीसबेर यह। गहिगहि पुनिपुनि दियो, नाहिं रखिलियो आपवह॥ हौं डिम्भ बहुरि नव बाहुबल, घोरमहा अति बीरवृत। बिरमिये क्रोध ह्वैजै मुदित, जाति पूज्य भगवन्तकृत २४॥

चन्द्रायणाछन्द॥ कान्त नाहिं द्वैबार बाणसंधानहै। आश्रितको द्वैबार देत नहिं थानहै॥ अर्थिनको द्वैबेर न अर्पत दानहै। परहां। भापत नहिं द्वैबेर राम अभिधान है २५ राम लियो वह धनुष सहेल सुजानहै। गुण योजन करि बाण अकर्षण ठानहै॥ छबि मकरध्वज मध्य नमासत भेदहै। परहां। किय भार्गव मुनि स्वर्गगती उच्छेदहै २६ रामबाण संधान निरर्थक नहिं कदा। मुनि प्रति किये प्रहार ब्रह्मबध है तदा॥ किये भूमि पर पतन भूत पीड़ा यदा। परहां। छेद्यो मुनिको मरण अमर कीनो सदा २७ चापाकर्षण ताटकारि आकर्ण है। लखतंसीय सासूप नैन आकर्ण है॥ पहिले भवधनु भञ्जि राम मोकोलई। परहां। अबै कन्यका अन्य लैन इच्छाठई २८॥ दोहाछन्द॥ इहिबिधि साशंकित भई, करि कुतर्क कमनीय॥ पुनिपुनि सिय पेखनलगी, रामरूप रमनीय २९ अब उदन्त सुनिलीजिये, परशुराम मुनिकेर॥ गये गर्बके टेरसब, रहे रामतनहेर ३०॥ षट्पदछन्द॥ कार्त्तवीर्य भुजदण्ड, सहस उच्छेदन पण्डित। जामदग्नि युधबीर, उरसिउदण्ड अखण्डित॥ लखत राम अतिउग्र, बिशिख करधर उहिंअवसर। अबिनयगयो बिलाय, हीय हुलसाय बिनयवर॥ ब्राह्मण्यदैत्य प्रणईभयो, पिशुनभाव भार्गव भग्यो। श्रीरामचंन्द्र अभिनन्दितब, अमलतवन उचरन लग्यो ३१ अहो रामगुणग्राम, धर्मधुंरधांम धुरंधर। दिनमणिकुल

कल कलश, प्रचुरपुहवीश पुंदर ॥ जो न आप अवतार, अमल निरमल महिहोतो। तौ अवलम्बन अवनि, अवनि अधिपन नहिं हो तो॥ त्रैलोक्य ताप त्रासक तरल, निजनर मुद मंगलकरण। अपराध ओघ क्षमियो बिभो, सकल लोक अशरण शरण ३२॥ दोहाछन्द ॥ तब सुनि भृगुपति बरतवन, बदत बचन रघुनन्द। जामदग्निमुनि चरणयुग, करि अभिबन्दनबृन्द ३३॥ मनोहरछन्द ॥ जाये जमदग्नि पुनि पायेहौ पिनाकी गुरु, बीरज बिधानना बखानत बनन्तहैं। कर्मकरि सारेहू जहानबीच जाहिरहौ, धरमधरैया धीर महिमा मनन्तहै ॥ मुद्रित समुद्रसप्त सप्तद्वीपवती मही, दीनिहै त्रिसप्तबेर भूसुर मनन्तहै। सत्यनिधे ब्रह्मनिधे तपोनिधे भगवन्त आप लोक लोकोत्तर उपमा अनन्तहै ३४ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ जानि आप अवतार भये रघुनाथहै। परम प्रेममिलि गाढ़ नयनयुग पाथ है॥ अर्प्यो तेज महत्त्व क्षत्रियबध छंडिया। परहां। उत्तर दिशि कियगवन तपसिमन मंडिया ३५॥ षट्पदछन्द ॥ बहुबिधि बाजन बजत, मनहुँ घन गरजत मधुधुनि। गावत मङ्गलगीत, सुवासिनि चेतसि चुनि चुनि ॥ बिरदावली बदन्ति, बृन्द बृन्दन बन्दीजन। बेद मन्त्र बर बिप्र, उचारत अखिल मुदितमन ॥ श्रीराम सीय पाणिग्रहण, निरखत मुनि नर सुर असुर। आनन्द ओघ वर्त्ततभयो, उहि अवसर सब जनकपुर ३६ ॥ दोहाछन्द ॥ दूलह दुलहिनि दिपत दुहुँ, रति रतिपती समान। मञ्जुमुहूरत जनकनृप, दीनों दुहिता दान ३७ ॥ हरिगीतकछन्द ॥ श्रीरामश्याम सुकाम अतिअभिराम पीतम पीयके। पाये परसिकर सकल सुखनिधि हीयहरपत सीयके ॥ आनन्द सतचितरूप भासत योगनिद्रगता यथा। कन्दर्प के बड़ दर्पके शर भिन्न भ्राजत हैं तथा ३८ बाल्मीकि गौतम कुशिक-

नन्दन जामदग्नि वशिष्ठहै। ये व्याह बिबिध बिधान बिरच्यो शता-
नन्द बिशिष्ठहै॥ सम्पूर्णक्रिय परिपूर्ण तूरण सीय लक्ष्मण साथ
है। कीनो गमन द्रुत आगमन निजपुरी प्रति रघुनाथहै॥ ३६॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ
कविटीकारामाङ्गजगोबिन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसीतास्वय-
म्वरोनामपञ्चमोल्लासः॥ ५॥

अथ श्रीहनुमन्नाटके प्रथमोंकः॥ मनोहरछन्द॥ आवत अवधपुर जा-
नकी लषणयुत, बन्दि गुरुलोक रामचन्द्र प्रेमपाये हैं। परमउछाह
छायरह्यो गेह गेहनमें, दिव्यदेह देहमें सनेह सरसाये हैं॥ पहिलो
पहरबीत्यो मित्रन मिलनमध्य, बाकी तीनयाम अतिदीर्घ दरशाये
हैं। दण्डकरि ताड़त तुरङ्गतत सीताराम, चित्र हयशालामें बिचित्र
छोहछाये हैं १॥ दोहाछन्द॥ पियताड़त हयशालहय, सियताड़त
हयचित्र। उभयभये उन्मादथित, किहिकारण कहुं मित्र २॥ तस्यो-
त्तरं॥ घनाक्षरीछन्द॥ परनिपधारे प्रातही ते पुत्र पुत्रबधू, अमित उ-
छाह छायरह्यो औधमें अपार। अफ़ताब गिरि में निहारि रवि
रूपरम्य, दम्पति हृदयभांति जाको पेखिये न पार॥ मङ्गलमनोहर
निहारन न काजआये, अर्क अश्व उनजानि कछु धुनि धारधार।
अस्ताचल ये हैं कम्ब ऐसे उरआन्यो तब, मेदुरमें मन्दुरमें दजें
तिन्हें बारबार ३॥ षट्पदछन्द॥ गये अस्तगिरि अर्क, उदय शशि-
धर दरसायो। रंगपक्क नागिं, पिंग सुन्दर सरसायो॥ गुरुजन
आयसुपाय, गई निजमन्दिर अन्दर। सियारम्य रम्भोरु, पतिव्रत
प्रेम धुरन्धर॥ मुख मन्द मन्द मुसकन सहित, रसिकशिरोमणि
स्वामिप्रति। आनन्दकन्द रघुनन्दजित, ग्रामकाम अभिराम अति ४
प्राचीभाग सराग, तरणि बिरहिणि बिस्तारे। नीरजालि निद्रालु,
कुमुदकुल बिकसितसारे॥ बिगत बिकार चकोर, शोक सह कोक

लोकहै। सावकाश आकाश, शमित तमतती तोकहै ॥ कन्दर्पदर्प अर्पित हृदय, प्रबल प्रसर्पण करिरयो। शर्बरी स्वामि अभिराम अति, सार्बभौम समुदयभयो ५ कैरवकोरक बिकसि, तरुण तरणी मनबिदलत। मीलत अलि अम्भोज, मान मानिनि उन्मूलत ॥ प्रसरि जुन्हाई जाल, तोमतम कवल करतअति। ऊर्ध्वबेल अम्भोधि, आकुलित कोक कुलनतति ॥ दिशिबिदिश सकल धवलिम धरत, हरत निखिल तनतापहै। बरबरस हृदय आनन्दनिधि, उदय सुधाधर आपहै ६ कुचगिरि शिखर उतंग; हीय सीमन्तिनिं सरसत। अजौं मान यह मूढ़, तितै निबसत नित दरसत ॥ कुपित कलेवर अरुण, रूप रोहिणिपति आन्यो। करपसारि चहुँओर, कुमुदकुल बिकसन ठान्यो ॥ तितरुकी हुती भ्रमरावली, बांधिपांति निकसी लसी। मनु मान प्रहारण कारने, असित असी निकस्यो शशी ७ अस्तभये दिननाथ, वेष उहिको शशिलीनो। सहितराग अनुराग, कमलिनी सपरसकीनो ॥ पायशीतकरपरसि, तथा मुद्रित मुख ठान्यो। परतियरत निजनाथ, कुमुदिनी कामिनि मान्यो ॥ परहां। सकथन कौतुक किये तब, अति लज्जित ह्वै रयो। अरुणिमा गई सब अङ्गकी, इहिकारण पांडूभयो ८ दिक्षागुरु शृंगार, मुकुर प्राचीदिशि तियको। कुमुदन कौमुद करन, चकोरन हरषन हियको ॥ प्रौढ़भये शीतांशु, रोदसी बपु सरसत है। राम कहत सखि करहु, तर्क अस कस दरसत है ॥ यह किधौं पूर कपूर कृत, किंवा मलयज लिप्तकिय ॥ पुनि ॥ किधौं पखास्यो पारदनि, अथवा फाटिक मणि खचिय ९ ॥ दोहाछन्द ॥ सखीकहत करजोरि युग, सुनियें बिनय हजूर। भयो सकल संसार मधि, रावर यश परिपूर १० फाटिक नहिं पारद नहीं, नाहिं चन्दन न कपूर। श्रीरघुनन्दनरावरो,

सुयश जगत परिपूर ११ तदनन्तर निरखतभये, चुगत चकोर अँगार । तिन प्रति रघुबर उच्चरत, शोधहु सारासार १२ सुधा सुधा-धर स्वादगहि, पुनि अङ्गारक प्रीति । करत अन्यथा कौन कहु, रची विधाता रीति १३ ॥ षट्पदरसं ॥ तरल तिमिर चय चमू चक्र संहार चक्र यह । चक्रबाक क्रीड़ा कृतान्त निष्क्रान्त क्रान्तिसह ॥ कान्ता कान्त नितान्त वृत्त संयोग साच्छिरह । गगन मानसर राजहंस राजत शशाङ्कमह ॥ पुनि ॥ शुचि संभोगारम्भमधि कुम्भ कुमुद तिय सुमुदप्रद । गीर्वाण नाहिं नीर्वाणप्रद पञ्चबाण निश्शाणहद १४ ॥ सोरठा छन्द ॥ बदैंसारिका बैन, सहचरि रानि सुनायकैं । यह सूचनकरि सैन, अवसर ठहरन कौन अब १५ निज निज गई नि-केत, सकल सहचरी समुझि जिय । शोभा सकल सँकेत, सिय सिय पिय हुलसन्त हिय ॥ १६ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारा-माङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसहंचरीगमनोनामषष्ठोल्लासः ॥ ६ ॥

हरिगीतकछन्द ॥ श्रीरामचन्द्ररु जानकी युग हृदय किय नीशाण है । जे चन्द्रमण्डल शाणतैं उत्तीर्ण रतिपति बाण हैं ॥ तेपञ्चबाणक बाणते निकसे कसे आकर्णलौं । लागे अचानक आयके युगवक्ष थलवर बर्णलौं १ द्वाराग्रभागनि जाय प्रीतम प्रीतियुत गहिअङ्क पै । लीनी निमी नृपनन्दनी आनन्दयुत परयङ्कपै ॥ रोमाञ्चबपु अतिनम्र आनन नाहिं कछुतनु भानकी । संकोचकरि संकुचित हेरइ जानकी प्रियप्रानकी २ संसारसारो कहत स्मरशार पञ्चबानि प्रमानकी । कोशादिकनमें काव्यगणमें व्याकरण अनुमानकी ॥ बिख्यातहै सब ख्यातमैं शरंपञ्च इति अभिधानकी । मोगात मैं अगिनन्त किमि रोमाञ्चलखि कह जानकी ३ ॥ षट्पदछन्द ॥ गाढ़ा

लिङ्गितहोय, स्वपिहि स्वामिनि पिय भाषत। नहिं नहिं नहिं इति बचन, जानकी आनन राखत॥ कोमल कमल समान, स्वामि बक्षस्थलराजैं। मम कुच कठिन कठोर, चुभन संशय मनछाजैं॥ पुनि॥ पवन प्रवेशन होनहित, करतहत मैथिलि शिथिल। प्रभुप्राणनाथ प्रियप्राण सिय, किय आकर्षण बाहुबल ४ बाहुपाश अन्योन्य, ग्रहण रसभर भलभूषित। जयति युगलकिशोर, मुहुर्मुहु उपम अदूषित॥ अति अभिमतफल, लेत उभय सुखदेत परस्पर। गर्भसार संसार, भयो नूतनइव रसपर॥ महमञ्जुल मधुरालापकरि, हां हां हां रघुबर रटत। निमिनाथनन्दनी मेदगिरि, ना ना ना कहिकै नटत ५ खदिरसार घनसार, युगल चूर्णन करि आवृत। नागबेलि दल बिमल, बीटिका निज आननधृत॥ कह्यो लखीसों लेउ, लियो सिय चार भागकरि। धर्मादिक फल चार पदारथ तुलित धीर्यधरि॥ पुनि॥ रामचन्द्र सानन्दहुइ, मैथिलिमुख निजमिलत मुख। अतिमधुर पाइ प्रभु अधररस, पाये ब्रह्मानन्दसुख ६॥ चन्द्रायणाछन्द॥ जब कछु निद्रित नयनभये युग सीयके। तबै हृदय पर किये पानिपुट पीयके॥ चित्तस्थित प्रभुरूप बिनिर्गम नाहिंचहै। परहां। यह उरआशय अमल निरुन्धितही रहै ७॥ दोहाछन्द॥ बैदेहीबर बक्षथल, यक्ष कर्दमाभ्राय। आयो अलि अवलोकि त्रिभु, उहिंबरणत चितचाय ८॥ षट्पदछन्द॥ कान्ताकान्त नितान्त, कुचान्तर चन्दन चर्चित। मदन दहन वप शमन, हेत घनसार समर्चित॥ सिया उरस्थल मध्य, मधुपं निर्मग्न भयो जिहिं। यच्छ रहै बाहरे, करतउतप्रेक्ष पेखितिहिं। मनुरह्यो पञ्चशर बिंशिख हिय, रहे पुंख अवशिष्ट है। सो सुनत ब्याज निद्रित प्रिया, श्रवण सुधासम मिष्टहै ६ प्रथुल जघन घनभार, मन्द आंदोलन

आनै। मृदुचञ्चल अलिकाग्र, अवलि अलि आभाभानै ॥ प्रक-टितकृत भुजमूल, फुरत श्रुति कर्णपूर है। स्तनलीला लालित्य, बसत वपु पूरनूरहै ॥ जानकी ब्याज निद्रा यहै, प्रमुदित मानस पीय को। हीयको हरन हुलसन्तहै, जीवन जानहु जीयको १० लखि नारी निद्रालु, बसन पियहरिबे लागो। काञ्चीरव सुनि काम, तत-क्षण आवत भागो ॥ तस्कर लुकिबे लग्यो, ताहि मणि गणनि बतायो। काम चलाये बान, चोर अतिशय सतरायो ॥ घनजघन जानि गिरिवर गुहा, तित तूरन कीनो सदन। लखि शम्भु युगल उर ऊपरै, है सभीत रुकिगो मदन ११॥ सोरठाछन्द ॥ प्रकट पद्मिनी प्रीति, जिमि बरणत रसग्रन्थ मधि ॥ सो कीनी सब रीति, अन्त-र्यामी रसिकप्रिय १२ जनक जनकजामात, जगजननी जनका-त्मजा। शुचि शृंगारकी बात, उचित नहीं बहुबरणिबो १३ तद-नन्तर सुचरित्र, सुनि लीजै सज्जन सकल। पूरणपरम पवित्र, जब जागी जनकात्मजा १४ ॥ षट्पदछन्द ॥ करतप्रेम करि स्पृहा, बाल भावन करि भीती। आकुञ्चत निज अङ्ग, सुरत संगमपर प्रीती ॥ अहह नाह नहिं नहीं, ब्याजसह बच सरसावत। मधु रसमेर कटाक्ष आदि भावन दरशावत ॥ पुनि ॥ निधुवन घनकेलि करि म्लान भाव जिय भाजत है। अरु शङ्कातंकित चारु चितरमण रभसभय छाजतहै १५॥ दोहाछन्द ॥ अधर दशन सीत्कार करि, कहत युगल करजोर। निर्बिशङ्क मनहोय पिय, पिव पिव रसना मोर १६ ल-लितशालि आलाप करि, बिलसत बाकबिलास। अविरत निमि नृपनन्दनी, पिय हिय करतहुलास १७ रम्भा बीणानादते, मधुरस-रस सुखबास। सुरभित सुरद्रुम सुमनसम, बरसिय बचन बिलास १८ रसिक शिरोमणि सांवरो, श्रीरघुबर रमनीय। सुनि बैदेही बचन

वर, कहत बचन कमनीय १६ ॥ षट्पदछन्द ॥ कानन गये कुरङ्ग, कुहरगिरि केहरिगयऊ। दिग्गजगये दिशान, कमल जल आश्रित भयऊ॥ चष कटि कुच बर बदन, बिनिर्जित पेखहु प्यारी। पायपराभव परम, भये अति लज्जित भारी॥ यह रीति सदा सतपुरुषकी, मानमलान जरूरहै। तव मान ततक्षण मरन मन, अथवा जावत दूर है २० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ जल अन्दर जपकरत कमलकुल जापके। अच्छमाल अलि अवलि परमपटु पायकै ॥ चहत चित्त चषतौर तुल्यते हौंनहै। परहां। धारण कृत इहहेत बनज मुख मौनहै २१ ॥ सोरठाछन्द ॥ ऐणी श्रेणी भूर, बन बसि तृण भक्षण करत। चषसम हौंनिजरूर, मृगनयनी तपकरतते २२ अयि ऐणी चष ओर, अहिश्रेणी बेणीलखत। तुलित होत नहिं तोर, इहिकारण छिपिरहत नित २३ चहत वतनुसम तौन, अये चारु चम्पक वनी। सुबरण सुबरणहौन, दहनदेह किय दहनमधि २४ दाड़िम हीयदरार, दरकि दरकि दरशातहग। दन्तपंक्ति मणिमार, तव निहारि निमिनन्दनी २५ ॥ षट्पदछन्द ॥ क्षीरसिन्धु अरु पुहुमि, युगल जिहिं पलुवाकीने। ओषधीश अरु बदन, तोर तिनमें रखि दीने ॥ अनिलदण्ड करि तुला, विधाता तिनको तोलत। यहै भूमिको भूमि, बहे गगनाङ्गन डोलत ॥ तव तोल बराबर होनहित, तारागण तितमें रखत। तउरह्यो ऊर्ध्वको ऊर्ध्व,वह, गुरुताई मुख में लखत २६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ कह सीता करजोरि नाथ चित चहतहौं। चरण भावनाधारि गिरामुख कहतहौं ॥ गुरुता भये न, स्वाद स्वाद मधुराइमें। हरिहां। करिनिश्शेष अधिकगुण जाइमें २७॥ दोहाछन्द ॥ गिरा मनोहर सुनिसिया, पूर्णकाम प्रभु तूर्ण। अभिमत आलिङ्गन कियो, कृत मनोरथ सम्पूर्ण २८ शुचितन शोभा

सीयकी, हरत रमण हियताप। अवधछैल आभा सियहि, आनँद देत अमाप २९ ॥ मनोहरछन्द ॥ कविरुवाच ॥ कैसे वे जलज नील अतसी कुसुम जैसे,कैसे वे कुसुम जैसे नीलमणि धामहै। नीलमणि धाम कैसे शोभित तमालतैसे, कसे वे तमाल जैसे दूबदल श्याम है॥ दूबदल श्यामकैसे यमुना प्रबाह जैसे, यमुना प्रबाह कैसे जैसे तनुरामहै। राममुनि श्यामकैसे नवघनश्याम जैसे, नवघनश्याम कैसे जैसे श्याम रामहै ३० पीतमणिमाल कैसी लतिका सुबर्ण जैसी, कैसी लता जैसी रङ्ग केसर अमन्दरी। केसर सुकैसी जैसी सोनजुही कैसी जुही, जैसी गिरा बारिबृष्टि बृन्दबर बुन्दरी॥ कैसी ओप अम्बुकी सुजैसी यज्ञज्वालज्योति, कैसी ज्वाल जैसी पीत-पट छबि छन्दरी। कैसी पटज्योति जैसी सीयछबि कैसी सीय,जैसी बिज्जु कैसी बिज्जु जैसी सिय सुन्दरी ३१ कैसे नील पीतपट पावन प्रकाशवान, जैसी श्रीतमाल स्वर्णमाल छबिधामिनी। कैसी बेस-माल जैसी नील पीत पङ्कजकी, मञ्जुल सुगन्ध प्रभा पूरित सुना-भिनी॥कैसे नीलपीत कञ्ज जैसी नीलपीतमणि, कैसी मणि जैसी गिरा कृष्णा अभिरामिनी। कैसी नदी जैसे घन बिज्जु घन बिज्जु कैसे,जैसे युग कैसे युग जैसे घनदामिनी ३२ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ बिरह दीर्घ आगामि जानिजिय जानकी। चरणायुध धुनि सुनत भोर भइ भानकी॥ पति बियोग जिनहोउ धारि जिय कञ्जरी। अरिहा। तासु शान्तिके हेत प्रपूजत मञ्जरी॥ ३३॥

इति श्रीपिपलोदरत्ननाधिपालरावतश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्कज-गोविन्दरामविरचितेश्रीवरबिलासेश्रीजानकीविलासोनामसप्तमोल्लासः॥ ७॥

हनुमन्नाटकेद्वितीयोंकः॥ षट्पदछन्द॥ श्रीरघुनन्दन आप,सीय संयुत सुख सरसत। भोक्ताभोग सुगङ्ग, समय कतिपय हियहरसत॥ नाहिं

प्रेमको नेम, निरन्तर हृदय लखावत। निरखि निरखि आनन्द, पर-
स्पर परम पिखावत॥ अहुराते पै अविलम्बअति, वहअवसर आ-
वतभयो। जोदशरथनृप मृगयाकरत,सुनीशाप पावतभयो १ वैश्य
तपस्वी यज्ञदत्तमुनि श्रवण तातहौ। वह निज तियासमेत, जरठ
जात्यन्ध गातहौ॥ दशरथनृपके हाथ, मस्यो तिहिं सुत गजभ्रमते।
शापदियो ऋषि अन्ध, तुमहुँ मरिहौ या क्रमते॥ अतिवृद्ध अवस्था
बीचतुम, सुत बियोग द्रुतपाइहौ। वह तरलताप संतापसहि, आपहु
सुरपुर जाइहौ २ मलिनकिरण दिनमणी, भूरिभूकम्पहोतहैं। उलका
दण्ड प्रचण्ड, पतन अम्बर उदोतहैं॥ धूसरभो दिगभाग, ग्रहण रवि
शशि बहुदरशत। शारमेयरुत अमित, फेरु परचार प्रकरशत॥ बहु
रुधिरबिन्दु बरसन्त नभ,तमतारा दरशन्तदिन। उत्पात अमितचित
कारव, प्रलयसरिस सरसात छिन ३॥ दोहाछन्द॥ तितलखि सब
उत्पात अति, केकयि करत बिचार। आइगयो अवसर अबै, लीजै
बर निरधार ४॥ कविरुवाच॥ षट्पदछन्द॥ पहिले भो संग्राम, अमर
असुरन अतिभारी। सुरसहायता काज, गयउ नृपसंयुत नारी॥
कटी चक्रकी कील, सुरत तिहिं नरपति नाहीं। तबै अँगुरिया आप,
दई केकयि तामाहीं॥ गहि विजयलखी तिय अंगुली, ह्वै प्रसन्न
द्वैबरदिये। ते थाप रखे नरनाथ महँ, जे चितचाहत अबलिये ५॥
दोहाछन्द॥ इकबर भरतहि नृपतिलक, द्वितिय रामबनबास। यह
उर आशय आनिकै,गई पुहुमिपति पास ६ कहनलगी केकयसुता,
सुनहु नाथ ममबात। जबते आगमसुतबधू, तबते अतिउतपात ७॥
षट्पदछन्द॥ बधू अमङ्गलरूप, भूपइहि जानहु जीमें। होत अमित
उत्पात, अहर्निश अवधपुरीमें॥ शान्तिहेत सह सीय, रामबसिहैं
सुगहनबन। भरतराज अभिषेक,कीजिये जो मानतमन॥ दीजिये

थाप बरदान दुहुँ, जगत महायशलीजिये। अति आपहोय निश्चिन्त अब, सुखीहोय इंतरीजिये ८ सुनत बचन केकयी, महिप मूर्च्छाभइ भारी। पुनि कछुहोय सचेत,धीय निज यह निर्धारी॥ सुखनकार जो कढ़ै, घटै मिथ्या महपातक। सुत बिछुरनहू यहै, घोर मम बपुको घातक॥ मन मरण श्रेय मान्यो महिप, नाहिं भलो मिथ्याबचन। तियते तथास्तु कहिदियो तब, तिहि बिरची बिधि बिधि रचन ६ शीशजटा बिलसन्त, बसन बलकल तन रामजु। छत्र चमरढिग भरत, बिमन मन नहिं बिसरामजु॥ तात चरणयुग नमत, भ्रातयुग मनबचकायक। अहह तात हा मात, भरत बद बिह्वलबायक॥ सहिसकौं और संकष्ट सब, कछुहु न मुखते कहिसकौं। गहिसकौं सिंह अहि अगनिखैं, रामबिरह नहिं रहिसकौं १०॥ चन्द्रायणाछन्द॥ कहत राम मोहिं पीर नाहिं बनबासहै। कोमलपद सियगमन तथा नहिं त्रास है॥ भरतभ्रात उर अरुचि राजपर रहत है। परहां। यह अति दारुणदाह देहको दहत है ११ सुनि सुमन्त्र बच भूप सुसुवन पयान है। शापसमयभो प्राप आप जियजानहै॥ राम राम रघुनन्द रामरट जासहै। परहां। फेर न लियो नरेश दूसरो श्वासहै १२॥ दोहाछन्द॥ अति आतुर भरत है, बूझतहैं निज माय। कैकेयी कर्कश हृदय,दियं उत्तर समझाय १३॥ षट्पदछन्द॥ मात तात कितजात, भवन सुरपति के भ्राजत। किहिकारण सुत शोक, कस्य तव अग्रज छाजत॥ कहा भयो है वाहि, कियो बन बीच गवन तिहिं। कानन मधि क्यों गये, दुई अवनिप आयसु जिहिं॥ कहु काहि भूप आज्ञादई, नृप मम बाचाबद्ध हुवि। फल तोहिकहा तव राज्यपद, सुनि करि हाहा गिखोभुवि॥ १४॥

इति श्रीकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवपाविलासेदशरथनृप स्वर्गसंप्राप्तिवर्णनोनामाष्टमोल्लासः॥ ८॥

षट्पदछन्द ॥ रघुवर गहि गुरुगिरा, राज्यपद तृणइव तजिया। बन प्रति जाउत भये, बसन बपु बल्कल सजिया ॥ सुरभि संग जिमि बाल बच्छतिमि लक्ष्मण सोहत। धारि धनुपशर तूण युगल सब जनमन मोहत ॥ जानकी पेखि शुकसारिका सासु चरणलगि हुकुमगहि। प्रिय प्राणनाथ श्रीनाथके साथ चली निज चित्तचहि १ रामगवन बनकिये भरतमूर्च्छा भइभारी। पाय चेतना कछुक गिरा मुनिजन धियधारी ॥ कीन्हों उत्तर कर्म निखिल निगमागम गायो। दशरथनृप निज जनक पुरन्दरपुरी पठायो ॥ पुनि भ्रात शोक परिपूर्णहिय नन्दीग्राम निवासकिय। शिरजटा मुकुट बल्कल बसन बसत सदा रघुनन्दजिय २ ॥ दोहाछन्द ॥ तिते निवसि पालत प्रजा, उर अन्दर असइच्छ। बनते प्रभु पगुधारिकैं, पैहैं प्रीति प्रतिच्छ ३ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ त्रिचतु चरण चलि सीय पीय सों यों कहै। कानन कितनी दूर श्रवण सुनिबो चहै ॥ देखि दशा मृदुअंगि नयन जलधार है। परहां। रामबिलोचन प्रथम अश्रु अवतारहै ४ ॥ षट्पदछन्द ॥ कहत रामसुनु सिया, कृशोदरि प्रथम कहावत। पुनि कुच कचकेभार, निरन्तर नम्रलखावत ॥ चारुचरण चंक्रमण, चैत्यकरि श्रम सरसावत। दोलांदोलन समय, स्वेद बहु बूंद बहावत ॥ अति सरितस्रोत निर्भर निकर, भूमिगर्त गिरिभूर हैं। मृग सिंह भूत भैरवसहित, बनचलि हौ किमि दूर हैं ५ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ पुनि पुहुमी प्रति पठत राम रमनीयहै। नवनलिनीदल अरुण चरण कमनीयहै ॥ पदपदपर प्रसखलत ललितगति तीय है। अरिहां। तब दुहिना बनगहन सिखावत सीयहै ६ ॥ दोहाछन्द ॥ काश्यपि तव यह कन्यका, कोमलतम सुकुमार। तजियैं तुम्हरी कठिनई, ध्रुव कोमलताधार ७ इमिकहि कछु कीन्हों गमन, त्रिभु-

वन तिलक ततक्ष । पथिकबधू बूझनलगी, पथि पथि सीय प्रत्यक्ष ८ चन्द्रायणाछन्द ॥ सखि कुबलय दलनील रावरे कौन हैं । यह सुनि स्मितकरि तितै गहत मुख मौनहै ॥ लखि लक्षण पहिचानिलेत ते बाम हैं । परहां । पीतम परमसुजान सकलगुणग्राम हैं ९ कमल-कोश नवनीत सुकोमल चरण हैं । दर्भसहित अति कठिन कूर यह धरण हैं ॥ शीशत्राण पदत्राण सुबलकल कीजिये । हरिहां । सीख देत पथबधू सुमुखि सुनिलीजिये १० ॥ दोहाछन्द ॥ इमि सिखवत निजनयन भरि, नीर पथिकजन बाम ॥ क्रम क्रमकरि प्रापतभये, चित्रकूट अभिराम ॥ ११ ॥

इति श्रीपिष्लोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-रामाङ्जगोविन्दरामाविरचिते श्रीवरविलासे श्रीरामचन्द्रचित्रकूटा-गमनोनामनवमोल्लासः ॥ ९ ॥

दोहाछन्द ॥ तितआये सानुज भरत, सहित सैन रनिवास । उमँगि उमँगि अकुलाय उर, सहत न बिछुरनत्रास १ मरन भलो बिछुरन बुरो, सब जानत संसार । वहै दुःख इकवारहै, यह दुख बारम्बार २॥ षट्पदछन्द ॥ जटाजूट शिरसोह, बसन बलकल बपु बिलसत । प्रणमत भरत परेखि, प्रेम पुलकावलि उलसत ॥ तारसुरनकरि रुदित, सकल कल बिकलभये हैं । बन बिहंग मृगदीन, नैन तितनीर छये हैं ॥ मनु आय बस्यो करुणाकटक, चित्रकूट कीनी फिकर । तिहि अश्रुओघ निकसन्त यह, नाहिं भरत निर्भरनिकर ३ ॥ दोहाछन्द ॥ देत सुमित्रा शिक्षसुत, स्वच्छ लच्छ मनलेख ॥ शुचिसेवन अवसर मिल्यो, उरअशेष अवरेख ४ मोहिं जान जनकात्मजा, जनक जनकजामात ॥ अवधसरिस अटवी लखहु, जाउ यथासुख तात५ शिरधरि आयसु भ्रातकिय, भरत अवध प्रतिगौन । सीय लक्ष्मण सहित विभु, बिहरत गिरिवर तौन६॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ बैदेही

बच बदत सुनहु मम पीयहै। शिलाएक हुइ प्रथम सुगौतम तीय है॥ बिन्ध्यअद्रि पर अमित उपलपद परसहै। परहां। करि हैं मुनि तियवन्त कितक पियसरस है ७॥ षट्पदछन्द॥ नौकारोहण कियो, लियो सुख अमित जानकी। अरजकरी करजोर, कन्त करुणानिधानकी॥ गौतम मुनिकेशाप, आप अहल्या उद्धारी। यहकाहू मुनिसख, पोत पुत्री भइ प्यारी॥ लीजियेअँग याको अत्रशि, चरण परश नितदीजिये। उद्धारहोय तबलौं बिभो, मम आलम्बन कीजिये ८॥ दोहाछन्द॥ जलयानरु थलयान में, जानत नाहिं अयान॥ एक रही रनिवास में, दूजे शिशुता जान ९ देखि दैन्यता सीयकी, रघुबर दीनदयाल॥ गोदावरितट विपिन मधि, पटुकीनी पतिशाल १०॥ लक्ष्मणउवाच॥ षट्पदछन्द॥ जितै रघूत्तम कुटी, तितै वह पञ्चबटी है। पञ्चाबटी परेख, पाथ सुख एक वटी है॥ तरल पुरस्कृत तटी, भीति संश्लेप बटी है। गोदा यत्र नदी, युतरङ्गित सरल तटी है॥ कल्लोल लोल चञ्चत्पुटी, दिव्या मोद कुटीरटी। संसारसिन्धु शकटी सदृश,स्वल्प धर्म नरदुष्कटी ११॥ जानक्युवाच॥ मनोहरछन्द॥ क्रीड़ाअवतार कल्पबटसे बिराजमान, प्रकटीकृत बिश्ववट पिष्ट अण्डत्रट है। बिश्व अम्बुजन्मबट भक्तन शकट ध्वस्त, संकट छमीके क्रांति घोवत कपटहै॥ संपट अघरसीय भिन्न शत्रु कुम्भीघट, खण्डन शकटबन्दौं राम दुरघटहै। शीश जटाजूट पट बलकल राजमनि, कोटि कोटि कटैं बेग बिपदा बिकटहै १२॥ दोहाछन्द॥ बिगत परिश्रम होय सिय, पिय अभिबन्दनकीन॥ पेखिकुटी प्रमुदित भई,गईताप बिधि तीन १३॥ षट्पदछन्द॥ बीस नयन मदनान्ध, सदन मारीच सिधायो। है बिनीत, युत प्रीति, बिदित यह बचन सुनायो॥ तुम मञ्जुल मृगरूप, धारि दण्डकबन बिचरहु। जित

मृगनैनी जनक, सुता सोहत तित प्रचरहु ॥ अति अद्भुत अङ्ग बिलोकि मृग, सिय पिय प्रति याचन करहिं। अभिलाष अङ्गना पूरि वे, रामतोर सँग अनुसरहिं १४ हौं यह अन्तर पाय, सीय गहि जैहौं निजपुर। तव अधीनहै काज, करहु ममआनि बिनय उर ॥ जो यह इच्छित मोर, सुनहु मारीच न करिहौ। तौ इतमें बिन मौत, तुरत मेरे कर मरिहौ ॥ है रावणते मरतव्य इत, रामहाथ मरतव्य तित। मरतव्य अवशि मारीच लखि, श्रीरघुवरकर होहिं हित १५ ॥ दोहाछन्द ॥ यह बिचार चितचारु चुनि, मृगतनु गहि मारीच ॥ हरित दूब चुनि चुनि चरत, बिचरत बन २ बीच १६ ॥ षट्पदछन्द ॥ दशरथनृप कुलदीप, पर्णशाला मधि सोहत। सह सौमित्री सीय, महामुनिजनमन मोहत॥ स्वच्छ सलिल पटु पान, करत सुन्दर सरितासर। ललित कन्दफल मूल, गहतबीते बहु बासर ॥ अब ये ते पै आयो उतै, मृगबपु बनिमारीच है। पठयो जुनीच दशकण्ठको, बिचरत कुटी नगीचहै १७ सुबरण सकलशरीर, हरित मणिमय शृङ्गद्वय। बिद्रुममय खुरचार, रदच्छद माणिक मणिमय ॥ नील तारका नयन, पटुल पेखन अति चञ्चल। सर्व रत्नमय रम्य, रूप सिय लख्यो दृगञ्चल ॥ मृग महामनोहर मञ्जु लखि, मैथिलि मन प्रमुदित भई। उर साभिलाप अति होयकै, पिय बिनती करती भई १८ निशाचार मारीच, सांग मायाकुरङ्ग वह। निकट निधन जिहिं के, रस चारत धावत छिनमह ॥ गहन गहन मधि फिरत, ताहि चह गृहन जानकी। कोटिकाम अभिराम, रामप्रति गिरा गानकी ॥ शरनिशित धनुष धारण किये, मृगपाछे प्रभु अनुसरे। बहुबेर भई जियजानिकै, तदनु लक्ष्मण संचरे १९ ॥ सोरठाछन्द ॥ सियसंरक्षण हेत, लक्ष्मण धनुरेखा

रची। हियहुलसत बिभु हेत, तदनन्तर तित संचरे॥ २०॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्री दूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे मणिमयमृगमारीच-
गमनोनामदशमोल्लासः॥ १०॥

श्रीहनुमन्नाटकेतृतीयोङ्कः॥ षट्पदछन्द॥ आंदोलत शर एक, अपर कर धनुष धुनावत। पुहुपलता लखि ललित, जटा ग्रन्थी सरसावत॥ कोटिराम अभिराम, राम शुभ उपमालायक। बिपिन बीथिकाबीच, श्यामसुन्दर सुखदायक॥ अति अद्भुतगति मृगरूप, वह इत उत तित चितवत फिरत। मायाधिराज रघुराजमणि, इकक्षण नहिं कित थित थिरत १ कबहुंक धरपद धरत, कबहुं रसना तृणचाटत। कबहुँ होत अस्पर्श, कबहुं गुल्मन उदघाटत॥ कबहुँक किंसलय सूँघि, कबहुँ तनु त्रसित तापते। देखत दिशि दिशि कबहुं, करत कण्डूति आपते॥ इमि कबहुँक धावत वेगते, कबहुँक थिरता गहत है। वह मयामृग मारीच इमि, अद्भुतगति चितचहत है २ रामकहतभो लक्ष, आप अवलोकहु आछे। ग्रीवभङ्ग अभिराम, मुहुरमुहु हेरत पाछे॥ धावनते धियध्यान, चपलचित चितवत चमकत। पर तनु बीच प्रविष्ट, पूर्बबपु धारत धमकत॥ मनमानि मोर शरपतन डर, भ्राप्तदर्भ मुख ते गिरत। कृत बहुतर बियति प्रचार है, किंचित पुहमी पै फिरत ३॥ चन्द्रायणाछन्द॥ मृगवक्षःस्थल लक्ष कियो प्रभु आप है। दिव्य बाण सन्धान ठान दृढ़चाप है। परमप्रचण्ड प्रहारकख्यो जैब इहिं इतै। परहां। होय तपस्वी गमे दशानन तब तितै ४ चुनि मृगया मारीच गये युगभ्रात है। इत आयो दशकन्ध तपस्वी गात है॥ भयसंयुत जिमि मृगी तथा सियनैन है। परहां। ते लखि हों यह ठानि कहत मुख बैन है ५. धर्मिणि भिक्षा देउ अहो इत आइकै। लक्षण लक्षणैं लंघिदेत सियजायकै॥ धूरत धुत्र धिय धारि

धरी धरणीसुता। परहां। परम पतिव्रततीय तोमततिनितनुता ६ जब गहि चल्यो जरूर जानिजिय जानकी। तब रघुनन्दन पीउगिरा गुणगान की॥ अहह राम हा लक्ष दुष्टलेजात है। परहां। सिंहभाग शश गहत यहै का बात है ७॥ षट्पदछन्द ॥ अति आतुर सियबोल, सपदि सुनि युगल श्रवणते। जरठ जटायू गृद्ध, क्रुद्धकह बीस श्रवणते॥ रे तस्कर परदार, अरे अतिद्रुत क्यों जावत। तिष्ठ तिष्ठ मतिमन्द, तोर त्रासक हौं आवत॥ तज सीय परम गतिदेवता, नातर जैहौ शमनपुर। मम चण्ड तुण्ड करि खण्ड तव, गिद्धापियेंगे रुधिर उर ८ जन्म ब्रह्मकुल बीच, करण्ठ कृन्तन करि करिकै। कियो सम-चेन शम्भु, शीश आगे धरि धरिकै। शक्रहु पै है शक्ति, चण्ड उद्द-ण्डन दण्डन। कन्दुकइव कैलास, धारि कीन्हें करमण्डन॥ है परम पराक्रम पुञ्जयुत, यहै कर्म अनुचित करत। हरिधर्मपत्नि रघुवीर की, तनकन मन लज्जा धरत ९ रावण सुनि वह बचन, धीयलागो निर-धारन। यहै किधौं मैनाक, करत ममभार्ग निवारन॥ शक्र वंत्रते डरत, काहि मम सनमुख आवत। नाहिं गरुड़ निजनाथ, सहित मोहिं न बिसरावत॥ अब जानि लियो शठ जरठ यह, गृद्धजटायू नाम है। इत आवत निजवधकाज जड़, जैहै द्रुत यमधाम है १० पुत्रिसीय जनि डरहु, दुष्टजैहै नहिं आगे। रेरे निशिचर नीच, काहि मम भयकरि भागे॥ गहिरघुकुलमणिदार, कितै जैहै रे तस-कर। करिकै चञ्चु प्रवेश, तोरिहौं धमनी धसकर॥ द्रुत दशहुदिशा दिग देवदश, करौं सद्य संतृप्त सब। दशमत्थ काटि दशमत्थ तव, ऊरन नृपदशरत्थ अब ११ करत अस्त्र बिशेष, दलत भुज चक्रचूर्ण कृत। मर्दत युगहय हनत, रक्षपति किय व्रण आवृत॥ गर्जत तर्जत रुंधि, तिरस्कृत करत ताहि अति। मग रोकत क्षणमध्य,

क्षणक ताड़त गिद्धनपति ॥ इमि क्षण आकरषतशस्त्र तिहि, क्षण अत्रलुम्पत बस्त्रबर। पुनि प्रचलतनमन्तरु ऊर्ध्वगत, अति अद्भुत कीन्हों समर १२ गृद्धराज जब युद्ध, निरखि सह क्रुद्ध निशाचर। पुनि चपेट शिलसदृश, गहन पीस्यो पक्षी.वर ॥ कछुक प्राण अवशिष्ट, पक्षि परियो उरबीपर। राम राम श्रीराम, होत धुनि गिरि गुरवीपर ॥ चितवहत चारु रघुबर दरश, तिहिते तजत न प्रानहैं। ध्रुव ध्यान धरत बिभु चरणयुग, नहिं अभिलाषा आन हैं १३ जिय क्रिय शोच जटायु, कछु न मोतें बनिआई। सुधा गयो मम जनम, प्रथिप प्रीती न निभाई ॥ नहिं रक्षन बैदेहि, बीसभुज भुजा न तोड़ी। एकहु मुड़यो न मत्थ, सावती पांचहु जोड़ीं ॥ निरख्यौं न नयन भरि राममुख, नाहीं कछु कीन्हों सुकृत। हौं भाग्यरहित का करि सकौं, को मम गिनि सकिहै कुकृत १४ ॥ दोहाछन्द ॥ इमि मूर्छित करि गृद्धको, कियो गौन लङ्केश। बिबिध भांति बिलपत सिया, व्याकुल हृदय बिशेश ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे जटायुमूर्च्छावर्णनं नामैकादशोल्लासः ॥ ११ ॥

षट्पदछन्द ॥ अहह राम हा रमण, नाथ हा रघुपति सुन्दर। हा जगबीर सुजान, प्रचुर पुहमीश पुरन्दर ॥ हा दशरथ नृप नन्द, सच्चिदानन्द बृन्दनिधि। हा प्रिय पीतम परम, रम्य बिपरीत भयो बिधि ॥ हा कृपासिन्धु संकटहरण, दीनबन्धु अशरण शरण। बर बिदित बिमल बारिज बरण, चरण चारु मङ्गलकरण १ ॥ दोहाछन्द ॥ क्रन्दत निमिनृपनन्दिनी, जगत बन्दनी सीय। कुररी इव कूकन करत, धरत न धीरज धीय २ अति अबिलम्बित गगन मग, लिये जात लङ्केश। लखि बानर गिरि शिखरपर, निज आभरण अशेश ३

सैरध्वजी उतारि द्रुत, अलंकार निजअङ्ग । डारिदिये गिरि शिखर पर, उच्चरत गिरा अभङ्ग ४ मारुति प्रति इमि उच्चरत, ये आभूषण लेउ । राम पीउ देवर लषण, तिन्हैं तात तुम देउ ५ ॥ कविरुवाच ॥ मायामृग मारीचहो, तिहिं मनाकमधि मारि । पुनरागमनकरन्त तब, कलुक कुचिह्न निहारि ६ दाहिनिदिशि द्रुमडित्थ पर, करटरटत खकूर । प्राणप्रयाण समान कछु, है संकष्ट जरूर ७ लषणभ्रात अनुजात युद्ध, लखि अपलषनकरूर । करत अमित अनुमान मन, हरणंहार मुदमूर ८ क्षण क्षण क्षण मधि बिश्रमत, धरत धीय नहिं धीर । पर्णशालमधि भ्रातयुत, पहुँचे श्रीरघुबीर ९ सिय न लखत बिलखत हिया, किया कोणत्रय शोध । सूर्यकोण तिन तजिदिया, किया हृदय अवरोध १० शोकभीति धूजत हृदय, सद्दय सदा रघुबीर । कोण चतुर्थहुजौन सिय, ताकस धरिहौं धीर ११ ॥ अत्र श्रीहनुमन्नाटके चतुर्थोङ्कः ॥ षट्पदछन्द ॥ महाघोरतर समय, प्राण उत्क्रमण अधिक है । सिय बियोग अधिगम्य, असवतनु तजत न धिकहै ॥ पर्णशाल सब अन्त, राल आलोकन कीन्हो । कतहुँ न पतिव्रत सहित, सीय अवलोकन लीन्हो ॥ हा हृदय बिदीरण होतहै, इहिं अध्रा अशु कढ़त किन । मम प्राणनते प्यारी प्रिया, तिहिबिन नहिं रहिसकत छिन १२ ॥ दोहाछन्द ॥ एतेपै अवलोकि उत, उत्तरीय शुचि सीय । सुधि रमणी रमणीयमन, करि करि प्रिय कमनीय १३ पुनि पुनि पट जोवनलगे, रोवनलगे अधीर । नयननीर धोवन लगे, लगे निचोवन चीर १४ ॥ षट्पदछन्द ॥ द्यूतसमय उद्योत, होत इहिंको पण कीन्हो । प्रणय केलिमधि कण्ठ, पाशइहिं करि करि लीन्हो ॥ बरव्यञ्जन सुरतान्त, समय श्रमहर शुभ सरसत । शय्या सरस निशीथ, समय याहीहग दरशत ॥ ईत विधि वशते प्राप्तभयो

उत्तरीय रमनीय अति। कमनीय कलेवर सीयके, बश्यामानि मुहु मुहुगहति १५॥ चन्द्रायणछन्द॥ नहिं अन्दर पदं चिह्न न बाहरधारिये। पर्णशाल यह मोर कि अन्य निहारिये॥ मैं यह वहहौं राम कि अथवा औरहै। परहां। सिय बिन जिय नहिं सकत जु अवधकिशोरहै १६॥ षट्पदछन्द॥ केहरि हरिले गये, कटीस्मित हिमरुचि लीन्हो। दृगहरिगये कुरङ्ग, कान्तिचुनि चम्पक चीन्हो॥ कलरव कोकिल गह्यो, गमन युगभाग कियो है। अर्द्ध गह्यो मातङ्ग, अर्द्ध हरि हंस लियो है॥ कांतारबीच पशु हनि यथा, सब बिभागकरि लेतहैं। कान्ता तथैव ममभैथिली, लई हाय दुख देतहैं॥ १७॥

इति श्रीवरविलासेरामविलापारम्भोनामद्वादशोल्लासः॥ १२॥

दोहाछन्द॥ युक्त यही केकयसुता, मुहिं पठयो बनबीच। यह मम मति कित कनकमृग, श्रवणन नयन नगीच १॥ षट्पदछन्द॥ अत्रालिङ्गित ललित, कमल कोरकचषवारी। पीताभर अति मधुर, सुधाकर समसुखवारी॥ कलक्रीड़ाबिरभाव, मञ्जु मकरन्द विमर्दित। शुचि यह सुमनसमूह, देवदयिता बिन दर्दित॥ कितगई बचन बदरसमयी, गजगमनी मृगलोचनी। हा सिये प्रिये मम बल्लभे, संतत शोचबिमोचनी २ गाहि गाहि कान्तार, बनांतर बिपुल बिलोके। बल्लीदर्पक भल्लि, सदृश सब चष अवलोके॥ स्मारस्मार गइदूर, प्रिया बहुबारबारहै। गिरिवर ऊपर अटत, बिलोचन वारिधार है॥ हा सिये प्रिये कितमें गई, कछुहु न मुखते कहिगई। ममसर्बससुख सँग लेगई, अति दारुणदुख देगई ३ भूरज रञ्जित सर्ब, वपुष बिधु बिलसत कैसे। दह्यमान बिरहागि, धरालिङ्गितकिय जैसे॥ मन्यु बिदारित चित्त, दुचित है उचरत बानी। हा सीते हा जनक, नन्दिनी प्रिय सुखदानी॥ लखतेरो आनन चन्द्रमा, मेरे

नयन चकोर है। पुनि मेरो हृदय पपीहरा, स्वाति सलिलबपु तोर है ४ इहि बिधि बिलपत बिबिध, पर्णशाला चहुँश्रोरन। फिरत धरत धुरधीर, बीर श्रीअवधकिशोरन॥ हा जानकि कलकमल, नयनि सीते सुखदेनी। मम ममबारिज बिपिन, राजहंसिनि अहि बेनी॥ बहु बिरह बह्विअति दग्ध उर, दीनभयों दृग जलभरों। किहिठौर जाय कासोंकहौं, किहिदिशि अवलोकन करौं ५ गिरि शिखरस्थित वृक्ष, लतावरबायु न बीजित। कौनगयो गहि सीय, लखी काहू कहु तुम इत॥ चारुचषी बिम्बोष्ठि, बिपुल जघनारसना रटि। सीता नीता केन, बद्धनागेन्द्र काचिकटि॥ तेतरु बूझत तुम कौनहौ, आपकहतहौं रामहौं। नृपअवध ईश दशरथतनय, शोक अनलधिय धामहौं ६ हे गोदावरि पुण्य,वारि पुलिनेते देखी। कमललैन मृगनैनि, इतै आवत न बिशेखी॥ बरबिनोद कलुकरन, बिमल बारीबिच बिलसी। ऐसे बूझत फिरत, रई मूरति हिय खिलसी॥ इमि प्रतिपादप प्रतिनग पठत, प्रत्यापग प्रत्यग रटत। पुनि प्रति बर्हिण प्रत्येण प्रति, जानकियाचततित अटत ७॥ दोहाछन्द॥ पुनि लक्षमण प्रति प्रायुहै, बिलख बचन बदन्त॥ बिपुल बिरह उन्माद बश, बावरसम बिलसन्त ८॥ षट्पदछन्द॥ कोहो तुम कहु कहा, यहे हे नाथ नाथतर। दासलक्षमण नाम, आप में कौनआर्यबर॥ आर्य कौन श्रीराम, बिजनबन कहाकरतइत। देखत देबी दिव्य, कौन देबी सियसंभ्रित॥ सियनाम श्रवणसुनि बिकलहै, बिबिध भांति बिलपन लगे। हा जनकराजतनये प्रिये, बिरहपयोनिधि मधि पगे ९॥ दोहाछन्द॥ इमि बन बन ढूंढ़त फिरत, सह सौमित्री राम॥ बिलखत बिलपत चकितचित, नहिं जिततित विश्राम १० येते पै निरखत भये, गृद्धजटायु अचेत। अरु रावणरथ भग्न लखि,

उचरत रामसचेत ११ दशरथ नृपको मित्रवर, शत्रुनिषूदनहार ॥ ताप्रति प्रभु उचरनलगे, मूर्छित नयन निहारि १२ पूछतप्रभु पक्षीन्द्र प्रति, करी घोर घनत्रात ॥ कौन कुटिल बृत्तान्त सब, मोहिं सुनावहु तात १३ तब बिलोकि बिभुबदनबर, बदत जटायूबैन ॥ बरणत अब ऊदंत सो, सुनिये नीरजनैन १४ निशिदिन शशि रबि अर्द्ध सब, रावण निज चितचीन ॥ सामलपक्ष सिताष्टमी, बैदेही हरि लीन १५ ॥ किरीटछन्द ॥ देवनको दिन अर्धलखो यह लेख किये चितचेत चितावत। पितृनकी निशि अर्द्ध कहैं जिहिते अभ्रपक्ष प्रतक्ष पिखावत ॥ आठकला युत अर्द्धशशी पुनि मध्यदिने रबि अर्द्ध लखावत। निर्मलपक्ष भये भृगुबासर अष्टमिद्योस हरी सिय गावत १६ ॥ दोहाछन्द ॥ चैतशुक्ल तिथि अष्टमी, भृगुबासर बरतन्त॥ मध्यदिवस मधि मैथिली, रावणहरी असन्त १७ ॥ षट्पदछन्द ॥ यह सुनि बोले राम, भग्न किमिकियो महारथ। बज्रांकुर इव क्रूर, तुण्ड धनुखड़े गिरेपथ॥ हे सीरध्वजराज, पुत्रि तू धन्य लखावत। पञ्चानन पक्षीन्द्र, दशानन कुञ्जरयावत ॥ अतिभयो भूरि संग्राम इत, सो तैं निरख्यो नयनभरि। संचार दशानन मत्थपर, भोजटायु समरत्थकरि १८ पुनि जटायुप्रति कहत, रामभो तात सुनहु मम। तुम्हरे तेज प्रताप, स्वर्गपद पावतहौ तुम ॥ भले सिधावहु स्वस्ति, सहित पै एक कहतहौं। कान्ताहरण बृत्तान्त, तातढिग न कहु चहतहौं ॥ है रामनाम जो मोरतौ, कछु थोड़ेसे दिननमें। तित रावण ससुत सबंधुजन, ऐहैं कहि हैं छिननमें ॥ १६ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेजटायुस्वर्ग संप्राप्तिवर्णनंनामत्रयोदशोल्लासः ॥ १३ ॥

षट्पदछन्द ॥ तदनन्तर श्रीराम, बिपिन बिचरत मृग देखे। इन

दुष्टन के वपु, प्रपञ्च मारीच बिशेखे ॥ प्राणवल्लभाश्लेष, बिपुल बिश्लेष कियो है। मृगी चक्रबध ठानि, चहतमृग बिरह दियो है॥ अतिमम अमोघ नालीक सब, दूरघात नित करतहै। पै प्रिया सदृश सोहत नयन, इहिकारण जिय डरतहै १॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ एते पै गिरि अस्त, गये रबि आपहै। उदय भयो शशितस्य, सदृशबपु थापहै ॥ देनलगे संताप, कमलदल नैन है। अरिहां। उचरत है श्रीरामलक्ष प्रति बैनहै २॥ षट्पदछन्द ॥ चलतरुतल सौमित्रि, तरणि ते तनुतापत अस । लक्ष कहतभो नाथ, निशामधि मिहिरकथा कस ॥ चन्द्रोदयहै यहै, सुनत प्रभु पुनि बचबोले । बच्छलक्षमन ललित, कथं वक्षःस्थलज्ञ तोले ॥ सौमित्रि बदत सुनिये बिभो, लखि कुरङ्ग लक्षन लसत। हाहा कुरङ्गलोचनि सिये, चन्द्राननि तव बिन त्रसत ३ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ मन्दरगिरि करि मथितभयो नहिं पातकी। जास्यो नहिं तम तुच्छ तोहिं घनघातकी ॥ हौं तेरे शत टूक करौं इकछनकमें। परहां। जो होतौ नहिं बदन बिदेही बनक में ४ ॥ षट्पदछन्द ॥ दाव दहनतरु शिखर, निवारहु निर्झर जलकर। नाहिं दवानलनाथ, उदयागिरि समुदय हिमकर ॥ बच्छ सुधाकर स्वच्छ, धूमधारन किमि कीन्हो। नाथ नाहिं यह धूम, छौनि छाया चित चीन्हो ॥ हा धरणिसुते सीते प्रिये, कान्ते कुत्र गता असी । तव बिरहानल संदग्ध हिय, तदुपरि जारत यह शशी ५ ॥ दोहाछन्द ॥ रामचन्द्रकरुणासहित, बदत बचन अति रम्य। प्राणप्रिया पटुप्रेयसी, परमप्रेम अधिगम्य ६ ॥ चन्द्रायणाछन्द॥ अङ्क कहत कबिकेपि, कहत केउपङ्कहै। कित नेकहुत कुरङ्ग, बिंब निरशङ्क है ॥ अवदत बिबुध कितेक, छाय यह भूम है। परहां। हौं जानत जिय बिरह, दहन धुवधूम है ७॥ षट्पदछन्द ॥ रे रे

निर्दर दुर्निवार, कन्दर्प मनोभव । पङ्केरुह प्रोत्फुल्ल, बाणसंवृणु संवृणुतत्र ॥ तजहु धनुषप्रति धीय, कहा पुरुषारसमोप्रति । कांता संग बियोग, जात हुतभुक ज्वालाश्रति ॥ बपुहोयरह्यो संदग्ध श्रति, ताहि प्रहारतहै कहा । सब शूरपुरुष पावत नहीं, मृतक मारिकै यशमहा ८ आपुंखाग्र निमग्न, तोरशर पंचपंचशर । मद-नाग्नी निर्दग्ध, यहै बपुहोहु निरन्तर ॥ निपट निरायुध काम, जीति सकिहै न अपरजन । सुखी हूजियो सर्व, दुखी इकहौंहिं रहहुमनं ॥ अति उत्तमते उतम सब, यहै बात अवलोकिये । इत एक आपसं-कष्टसहि, दुख त्रिलोकको रोंकिये ९ ॥ दोहाछन्द ॥ तरु अशोक वि-कसित बिमल, तिहिंतल गहि बिश्राम । चुपरहि कछु किञ्चितसमय, बदत बचन श्रीराम १० ॥ षट्पदछन्द ॥ तू नवपल्लव रक्त, रक्तमें प्रिया गुननकर । आवत अनिश अभङ्ग, शिलीमुखगन तो ऊपर ॥ तथा कामधनु मुक्त, शिलीमुख मोप्रतिआवत । कान्ता पदतल हती, हीय उभयन हरसावत ॥ समभाव मोर तव सकल है, भिन्नभाव इक यह बसत । लख मुहिं सशोक बिधिने कियो, तव अशोक अभिधा लसत ११ ॥ सोरठाछन्द ॥ हियपर धस्यो न हार, सिय बियोग भय मानि जिय ॥ तरुवर सरित पहार, अब अनन्त अन्तर बसत १२ ॥ षट्पदछन्द ॥ चन्द्रचण्डकर सदृश, पवनमृदु गति पबि ओपम । मलयजलेप कुलिंग, सुमन ममसूचि अग्रसम ॥ रात्रि कल्पशत तुल्य, प्राण भासन्तभारइव । यहै बैदेही बिरह, समय संहार काल-मिव ॥ हाहन्त कितक संकटसहौं, कौनसुनै कासों कहौं । हिय हटकत हरकत फटत है, अटत रटत जकि थकिरहौं १३ बपुभृश कृशता पाय, मोस बिरलाय गयो है । नैननिरन्तर नीर, चलैं वारी नरयो है ॥ दीर्घ दीर्घ निस्सांसलिये, सब श्वसन अट्यो है । हरण

होतही तीय,तेज तरतोमचव्यो है ॥ इमि चारतत्त्व भोगवन तनु, रह्यो शून्य अवशिष्ट है । यह कहा राम जीवन तजउ, कुलिश कठिन अतिक्लिष्ट है ॥ १४ ॥

इति श्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रविरहदशावर्णनंनामचतुर्दशोल्लासः ॥ १४ ॥

षट्पदछन्द ॥ लक्ष्मसहित श्रीराम, महाबन बिच बिचरत उत। गौर गवय मातंग, शरभशार्दूल कोलरुत ॥ कोलाहल आहूत, भूत बेतालपाल है । समुत्ताल कङ्काल, काल बिकराल जालहै ॥ चय-चक्र बालनालकृत, तुमुल घोर चिक्कारमिल । बहलान्धकार करि-कलितगुह, अन्तराल बिलसन्तकिल १ अबिरल परिमलबहल, सरल चञ्चल बहु बिगलित । बृन्दबिमल मकरन्द, बिन्दुकीलाल जालजित ॥ आलबाल बरवृक्ष, सुपिच्छिल लसत ललिततित । प्रमत्तालि गणमाल, लुलित मारुत आन्दोलित ॥ बाचाल बिपुल फुल्लित लसत, बकुल मुकुल कुलजाल है। धूसरितधूलि कोकिल-बधू, कूकमाधुरी मालहै २ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ तरल शिलोच्चय शिखर शिखी समुदाय हैं । नर्तनलीला सानुकूल मुदपाय हैं ॥ प्रचलत चक्रचकोर पक्षिगण लक्ष हैं । परहां । गुञ्जत मञ्जुलशब्द बिपुल प्रतिवृक्ष हैं ३ ॥ षट्पदछन्द ॥ अम्बर चुम्बनललित, लक्ष उर अन्दर दरसत । आलम्बनफल बिपुल, भार आलम्बित सरसत ॥ सकल जन्तु संतोष, पोष निर्दोष बिभूषित । सुधास्पर्द्धि बर्द्धिष्णु, सरस रसमय निरदूषित ॥ हिंताल तमाल रसालतरु, ताल प्रियाल चि-शालफल । मालूरशाल मलशल्लकी, पुनि शिरीष कृतमालभल ४ अशन शमी शिंशपा, शाक चम्पक अशोकचुन । कर्णिकार सुरदारु, अवर बहुसार श्रवणसुन ॥ कोबिदार जम्बू कदम्ब, अरु निम्ब उदुम्बर । सो भोजनरु करञ्ज, बकुल निचुलक खजूरबर ॥

पुनि बीजपूर जम्बीर, भाण्डार बहुरि वानीरहै। अरु कर्मरङ्गनारङ्ग, चन्दन कदली काश्मीरहै ५ धात्री प्राटल कुटज, चील कङ्कोल विभीतक। बटअङ्कोल मधुक, हरीतकि अरु भल्लातक॥ आम्रातक केतक, जयन्ति वैकङ्कत कङ्कत। अरु अश्वत्थ कपित्थ, तित्तिणी जपा अलंकृत॥ बन्धूक नागकेसर प्रमुख, अरण्यानि दुस्तर अटत। बाराहकन्ध आरूढ़ उत, बाम करत उत्कट रटत ६ पुनि दक्षिणदिशि पेखि, दक्षिणाचलपर प्रचलित। मलय मालती तगर, जाति दमनक लवङ्गतित॥ मरुत्रक अरु कंकोल, कमल कुलमुकुल कुमुदिनी। शतपत्रादिक ललित, कलित कह्लार प्रमुदिनी॥ तिनमञ्जु परमपरिमल मिलित, चुंबित चारु अपार है। काबेरी ताम्रपर्णी सरित, तुङ्गभद्र जलधारहै ७ नीरधार गम्भीर, सान्द्र परिपीत तरङ्गन। मैत्रावरुण सुतीय, ललित लङ्का शशाङ्कभन॥ रम्यरुद्र पादाद्रि, सरल सिंहल सालकजन। श्रीगोपालक पाण्ड्य, अचल बिद्रुम मण्डलघन॥ पुन्नाटककेरल चोलचुन, कुन्तल कर्नाटक कलित। करहाट आंध्रकल कामिनी, कृतसनान जित अति ललित ८ पीनस्तन बरबदन, जघनघन भल भुज मूलन। तिष्ठित धुत्र धर्म्मिल्ल, भार अन्तर्गत फूलन॥ मृगमद अगरु कपूर, कलित कुंकुम श्रीखण्डन। रचित यक्ष कर्दम, बिमर्द बर्द्धित बपुमण्डन॥ वह बिविध गन्ध परिमल बहुल, कुसुम मिलित मारुतचरत। प्रोत्थित भुजंग प्रफुलित फणन, खंजरीट क्रीड़ा करत ९ स्वच्छ क्षीर नीहार, कलित काश्मीर फटिकसित। शुद्ध शंख कर्पूर, कुन्द अवदात अपरिमित॥ महाभुजंगम परम, स्फीत फुत्कार प्रफुल्लित। फणामणिन मधि खंजरीट क्रीड़न्त बिलोकित॥ हुंव बाम नयन सकरुण सजल, इतरस बिस्मय मोदमय। उभचिह्न

अशुभ शुभ सूचना, भये संगमन प्रीतिभय १० संस्थितकोल कपोल, काकरव बामभाग हुव। कहत व्यसन अति दुथित, उथित संतत. सब जनभुव ॥ बरततहै दिन रैन, कहा अब अग्र दिखावहि। पुनि दक्षिणदिशि, खंजरीट शुभलक्ष लखावहि ॥ अधिरूढ़ भुजंगम फणनपर, क्रीड़त यहहै राज्यप्रद। मम एकसंग दोनोंभये, हैं यह अति आचरजपद ११ ॥ सोरठाछन्द ॥ भरेनयन युग नीर, क्षण विश्रामकरि चिन्तवन॥ सकरुण श्रीरघुबीर, बूझन लगे भुजंगसों १२ ॥ षट्पदछन्द ॥ तरुपल्लवइव लोल, जिह्व बन्धूक सुमनसम। तेरे नीरजनयन, भूरि भ्राजन्त भुजंगम ॥ हौं बूझत हौं तोहिं, पवनभुक कहु करुणाकरि। कोमलांगि शरदंदु, मुखी देखी कोउ सुन्दरि॥ इमि सुनत बचन रघुवीरकर, रचनरम्य सुकरुणसने। बोल्यो विनीत ह्वै बैन शुभ, भुजंगराजहियहित घने १३॥ चन्द्रायणछन्द ॥ गई गई वपु चम्पवर्ण पीनस्तनी। कुंकुम चर्चित अङ्गि करुणरसमें सनी ॥ शीतलांगिका आश गङ्गइव भ्राजिता। हरिहां। तारागण मधि चन्द्ररेख समराजिता १४ कहत राम इहिं व्यसन अधिकका औरहै। कहाहोयगो अग्र अभ्युदय मोरहै ॥ मरण शरण बरमोहिं नाहिं यह राज है। परहां। वह लक्ष्मण को होउ सुसुखद समाज है ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकविदीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेशुभाशुभशकुनावलोकनोनामपञ्चदशोल्लासः ॥ १५ ॥

षट्पदछन्द ॥ बाम तिरस्कृत कियो, कियो दाहिनो पुरस्कृत। धन्यसुवन्यशरन्य, अरन्यानी गाहनभृत ॥ किष्किन्धाद्री रौद्र,रुद्र अवतारमारुती। दीनी सकल सुनाय, ताहि निज उरसि आरती ॥ लेगयो सीयहरि कोउ कित, तुम तांको देखी सुनी। कपि हृष्टहोय

संकष्ट हर, बदवानी चेतसिचुनी १ सुनिये कृपानिधान, कापिरामा अम्बर मग। हौंथित हौ तिहि समय, अहो इतमें याही नग॥ पाप रजनिचर प्रबल, किये आकर्षण अतिद्रुत। जावतह्यो जिहिं बेर, श्रवणधुनि आई अद्भुत॥ हाराम प्राणपति जेहिरिपु, मुखउचरत डारत भई। मणिभूषित भूषण भव्यते, अवलोकन करिये सई २॥ दोहाछन्द॥ आञ्जनेय इमि कहि गिरा, भूषण भव्य समग्र। अबिलम्बित उत आनिकै, रखे रामके अग्र ३ रामसजल चष सह करुण, गदगदगिरा गँभीर। भूषण निरखे नयनभरि, बाढ़े पुलक शरीर ४ ये भूषण बैदेहिके, निश्चय मेरे जान। तुमहूँ लक्ष्मण निरखिये, करिलीजै पहिंचान ५ ॥ लक्ष्मणउवाच ॥ नाथ न जानत और मैं, कुण्डल कङ्कन आदि। पहिंचानत नूपुरनको, अनिश अंघ्रिअभिवादि ६॥ कविरुवाच षट्पदछन्द॥ सियआभूषण अखिल, राम निज हृदय लगाये। युगल नयन भरिनीर, बयन गदगदगिर गाये॥ इतर आभरण धरत, हुती नहिं हार हीयपर। इतकहुं अन्तर सहि न, सकत जानकीजीय पर॥ फल पंक्ति भेदको प्रापभौ, यह कीन्हो निरधारहै। अब हारन की गिनती कहा, अगणित परे पहारहै ७ मुद्रा मुख मैथिली, लखे बिन गमन चहतचित। परमहंस यह जीव, तदपि नहिं जायसकत कित॥ बैदेही बहुबिरह, बह्निज्वाला बिदग्धतनु। तेहिते भो परवश्य, पंगु प्रचरत न बनतजनु॥ पुनि पवनपुत्र प्रापत किये, आभूषण अवलोक उन। थुबिगये प्राणन प्राय न किय, आंजनेय आलाप सुन ८ अनुनय सहहनुमान, बिनयबर बचन उचारत। पुहुमिपाल श्रीराम, हीय नहिं हूजैं आरत॥ त्यज निज दयिता शोक, एकलंकेश लोकसह। जीतनको समरत्थ, कछू संशय नहिं यामह॥ यह गिरि सुग्रीव निवासथल, तितमें प्रभु पगुधारिये।

रघुवंशनाथ नरनाथ उत, बानरनाथ निहारिये ९ ॥ कविरुवाच ॥ तदनन्तर हनुमान, लक्ष्मण रामसहित तित। गवनकियो अविलम्ब, सभय सुग्रीव हुते जित॥ तीनहुँको कपिनाथ, लखतभो उत में कैसे। मूर्तिमन्त मनु अग्नि, अङ्गधरि आवत ऐसे॥ है गार्हपत्य इक अनल अरु, दक्षिण दहन द्वितीयहै। अभिधान अमल बिलसन्त, उहिं आहवनीय तृतीयहै १० अनिलज आनन अकनि, सम कान्ताहृति वृत्तं। बानरेंद्र बरनन्त, प्रबल बाली कृतकृत्तं॥ बिद्यमान पतिहोत, यहै अति अकृत कियो है। मारणकारण ताहि, समपन तुरत लियो है॥ श्रीरघुबर कियो अधिज्य धनु, सुबहुल रोषानल प्रबल। कान्तापहरणकी ताप अति, हुती अनुभवित भांति भल ११ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ नमन ससंभ्रमकियो अवधके इन्द्रको। आलिङ्गनकरि प्रचुर प्रेम सुकपीन्द्रको॥ द्रुतभाविनि कन्दर्पकेलि सबिलासहै। परहां। बिस्मृत पुनरभ्यास करत मनुतासहै १२ ॥ दोहाछन्द ॥ कपिपति बूझत मारुती, दशरथनृप सुतचार। ताटक अन्तक कौन कहु, बोले पवनकुमार १३ ॥ षट्पदछन्द ॥ राम भरत अरु लषण, शत्रुहन सुवन चारचुन। दशरथनृपके बिदित, बिश्व कपिराज श्रवणसुन॥ दिनकरकुल सन्तान, बल्लिबर गुच्छ सुमधुकर। राजपुत्र सुबिराज, मान तिन मध्य धीयधर॥ ताटका काल रात्री हुती, रामचन्द्र प्रत्यूष यह। जिहिं चरित कथा कल कन्दली, मूलकन्दसम स्वादगह॥ १४ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीराम सुग्रीवसमागमोनामषोडशोल्लासः ॥ १६ ॥

कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ सुनत प्रतिज्ञा परम, रामसुख वारिज बिकसी। बालीपठये सप्त, ताल अवलीउन्न निकसी॥ दैत्य सात

तरु ताल, सात अन्तर्गत अतिद्रुत। प्रकृति कुटिल करि क्रुद्ध, युद्ध कारण आये उत॥ सौमित्रि किये ते सरल जिन, शेषपृष्ठ थित मूलकिय। निज चरणभार करिलक्षमण, दिव्यअस्त्र रघुराजलिय १ सोरठाछन्द॥ सुनिये कृपानिधान, वदत लषण साशंकबच। इनपै शरसन्धान, सावधान ह्वै कीजिये २ कीजै संत निपात, एकसाथ इक बिशिखकरि। करत प्रहारक घात, यामें ह्वै जो अन्यथा ३ जनि शङ्किये सुजान, रामकहत सात्वग्यह्वै। हरत असज्जन प्रान, सज्ज भये सज्जन रहत ४॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ रामलियो कर बाण, बानि मुखलगे उचारण। कियोहोय दृढ़भाव, कुशिकनन्दन पद धारण॥ अरु पुनि जो मैं होउँ, तिरस्कृत बिप्रशेप बिन। अन्य अङ्गना मध्य, गयोमममन न एकछिन॥ तौ सप्ततालको भेदिकै, प्रबिशहु शर पातालमहँ। इमि कहि करि धनुषहि सज्जकरि, कियो बाणसन्धान तहँ ५ कदली बाल प्रकाण्ड, भङ्गसम सत्वर कीन्हो। एक बाणमधि सप्त, ताल तरु बेधन चीन्हो॥ सप्तसप्ति गज सप्त, सप्त मुनि सप्त सरितपति। सप्तदीप अरु मातृ, सप्त भयभीतभये अति॥ संख्यान साम्यता तालसम, हनि तिनको हमकोहने। जे सात सात जितनेहुते, ते सब घबराने घने ६ छूट्यो बाण कमान, ताल तरु सात फोरिकै। धँस्यो धरातलले प्रमाण, तिहिं तुरत दौरिकै॥ भङ्ग भुजङ्गम भूरि, भीत अम्बर पुनि आयो। पुंष धुनाय धुनाय, भाव विधि को दरशायो॥ कीन्हों न पराक्रम प्रबल कछु, रुच्यो शेष अत्रशेष है। निश्शेष बसुन्धर दारिबो, यामें कहा बिशेषहै ७ सुनतश्रवण संग्राम, रामहत सप्तताल सब। निरपराध बधकियो, तरुन अस जियजान्यो जब॥ कोपानल प्रज्वलित, हृदय निकस्यो वह बाली। गिरिशिखर बिच्चलयो, निरन्तर संगरशाली॥ फुङ्कारी पुच्छ अति

उच्छलत,कटकटात किलकिल करत। उच्छाह छक्यो बहु वक्षथल, अतिअधीर धीर न धरत ८॥ कविरुवाच॥ ताराभई सहर्ष,मोद मनमें नहिं भावत। पुरुषोत्तम श्रीराम, परम कृपया पुनि पावत॥ चिर बिरही सुग्रीव, वक्षथल लुठिहौं तूरन। प्रियतम प्राणसुजान,काज सिधिहैं सम्पूरन॥ इति मन्यमान गिरिशिखरपर, आरोहन कीन्हों कलित। संग्राम राम अरु बालिको, लोयनभरि लखिबे ललित ६ शैलशिखर संचरत, मनोरथ बितरत तारा। पारागत शोकाब्धि,बीर सुग्रीवसुदारा॥ प्रभुनारा नाराच, प्रबल धाराधिपधारा। हारावलि संत्यक्त,स्रस्त धम्मिल्लनभारा॥किलकिला शालि बालीमहा,कुटिल कुचाली कूरहै। प्रियसन्तापी पापी परम,यमपुर जलदि जरूरहै १० गिरीगरिम गम्भीर, महा महिमालखि बाली। कहत लक्षमन राम-बच्छ निरखहु बलशाली॥ बहल कलकला करत, बानराली प्रति-पाली। शिव शिव तुमुलोत्काल, चालित अति कृतघृणिमाली॥ लांगूलबल्लि प्रोद्यत शिखर, कवलित कौशिक कुलिशाकिय। दो-र्दण्डशैल प्रहरण निपुण, किहिं करिकै योद्धव्यजिय ११ ॥ दोहा छन्द॥ रामधीरता धारिधिय, नारायणनाराच। सज्ज कलित को-दण्डकरि, सुरचन बचन उवाच १२॥ चन्द्रायणाछन्द॥ पुरामूर्द्ध अभि-सिक्त सगुणबर विप्रहै। वेदमन्त्रकरि कियो कलित तब छिप्रहै॥ तिनके तेज प्रताप करहु उच्छिन्नहै। परहां। दारुण परतिय हारि प्राणबपु भिन्नहै १३॥ दोहाछन्द॥ पौरन्दरि परदारको, हरण पराभव प्राप॥ ब्रह्मतेज परिपूर्ण पटु, लसत रामशर आप १४॥ षट्पदछन्द॥ पायो बीर प्रमाण, बाणरघुपति बर बिलसत। पावक प्रलय समान, रोचि बिजुरी जिमि उलसत॥ हृदय भेद कृत बालि, तबै पौरन्दरि उचरत। सबके शिरपर काल,यहै बासर निशि प्रचरत॥ मम पिता

पुरन्दर तासु रिपु, रावण अनिहत इतरयो। यहशल्य हृदय शालत प्रबल, हौं सशल्य परपद गयो ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेबालिं
हृदयभेदनोनामसप्तदशोल्लासः ॥ १७ ॥

षट्पदछन्द। कविरुवाच ॥ ह्वै सकरुण सबिषाद, राम उचरत लक्ष्मण
प्रति। सुन सौमित्रे यहै, काज कीन्हों अनुचित अति ॥ गिरिगह्वर
मधिबिहित, योनि निज मानि महतसुख। अनपराध अनुभवत, ताहि
दीन्हों महानदुख ॥ किय महाबीर बालीहनन, तासु प्रबल परिताप
है। हौं मन्दभाग्य ह्वैहै कहा, अब मुहिं सियसुख प्रापहै १ शिरधुनाय
पछताय, रामकह पौरन्दरप्रति। तू ऊरनरत्न तात, बांत यह जग जा-
हिर अति ॥ मेघनाद शस्त्रोघ, प्रसर हरिदुर्यश दीन्हों। गौतममुनि
के शाप, नियन्त्रित भुजबल कीन्हों ॥ किय जनकजास रावनत्वया,
-कक्षागर्त कुलीरहै। ह्वैजै बिशल्य तव शल्य हर, जाग्रत अङ्गद बीर
है २ ॥ दोहाछन्द ॥ मेरी पाय सहायता, अङ्गद हनिहैताहि। ह्वै बिशल्य
कीजै गवन, रावण रहिहै नाहि ३ ॥ बालिरुवाच ॥ कहाबालि सुग्रीव
जो, कारज करिहै तोर ॥ सो हौं कानहिं करिसकत, निरपराध बधमोर ४
कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ रामनयन भरिनीर, बिमलबर बोलेबानी।
सुनहु पुरन्दरनन्द, कहतहौं तोहिं बखानी ॥ निरपराध सुखअर्थ
तोरबधभयो मोरकर। हनहु अबैतू मोहिं, शुद्धिह्वैहै ममसत्वर ॥ मत
होहु जनकजा बिरह अब, अबिरत उर इच्छत यही। सुनिबैन कमल
दल नैनके, बाली तब बोल्यो सही ५ ॥ दोहाछन्द ॥ जबलौं हौं हनिहौं
तुहिं, तबलौं शमनसकास। ह्वै निवास तजिदीजिये, स्वर्गबास अ
भिलास ६ इमि कहिकै श्रीराम प्रति, बाली छांड़े प्रान। तिहि बचन
सत्यकरन बिभु, रघुबर परमसुजान ७ कलुककाल सेवित शम

संयमनी पुरवीच। प्रहरि पुरन्दर पुत्रको, निबसे नयननगीच ८ पुनिविषाद परिहारकरि,कियपौरुप अवलम्ब। परम सुहृद सुग्रीवको, दियोराज अविलम्ब ९ ॥ षट्पदछन्द ॥ आदिकियो अभिषेक, सुहृद सुग्रीव राजपद। यौवराज्य अभिषिक्त, बालिसुत कीन्हों अङ्गद। पवनतनय ले आदि, कपिन सेनापति कीन्हे। बिनशंका प्रस्थान, ललित लङ्काप्रति चीन्हे ॥ तब बर्षाकाल व्यतीतकी, कपिभट म-न्त्रिन बिनय किय। सुनिमाल्यवान गिरिप्रबरपर, बर निवास जानन्त जिय १० ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ नाहिं रामते इतर शूरतर कोयहै। तिय हतिसम नहिं अन्य पराभव होयहै ॥ तदपि न कीनो सपदि समुद्र प्रवेशहै। हरिहां बन्धनसेतु करन्त आप अवधेशहै ११ नाहिं रामसम बली सकल संसार है। दारहरण सम अहंकार न निहारहै ॥ तदपि प्रतिक्षा शरद सेतु दृढ़बंधिया। परहां। तदनन्तर तित जाय निशाचर रंधिया १२ ॥ दोहाछन्द ॥ माल्यवान गिरिशिखर थित, लपणसहित श्रीराम। सुमिरिसीय कमनीयता, बदत बचन गुणग्राम १३॥ षट्पद छन्द ॥ इन्दू अञ्जन लिप्त, गलित दृष्टी इव हरणी। बिद्रुम अरुण मलान, श्यामछबि सुबरण बरणी ॥ सियास्वल्प सुरलेश, कोकिला कण्ठ परुषसम। बरहिनके बरबरह, गरह युतहेरत हियहम ॥ इमि बरणि अङ्ग सादृश्य को, जानकि गुण कीर्तनकियो। लखिताण्डव आडम्बर तड़ित, कहनलगे पुनि भरिहियो १४ ॥ किरीटछन्द ॥ लोचनचारु समान सरोज-तिन्हें यहबारि डुबावत पावत। तोर मुखच्छबिछाय छटासम छज्ज छपाकर मेघ छिपावत ॥ तो गति तुल्य हमेश चलैं जगहंस हमैं दृगदूर दिखावत्त। यावत तावतमात्र बिनोदन बस्तुसबै लखि दैवदुरावत ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्न पुरस्थकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवज्रविलासे बालिवधोनामाष्टादशोल्लासः ॥ १८ ॥

अत्रश्रीहनुमान्नाटकेपञ्चमोंकः ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ श्रीरघुबर कह बचनबर, बानर भटन सुनाय। शुचि सैनिक सुग्रीवके, चित्त सुनत लगाय १ महतव्यसन प्रापतभये, थिर न रहत कोउ लोग । लखि निशङ्क लङ्कापुरी, को इत आवन योग २ ॥ षट्पदछन्द ॥ है सहर्ष हनुमान, भुजन आस्फालन कीन्हों । निज प्रचण्ड दोर्दण्ड, परम पौढ़त लखिलीन्हों ॥ देव पश्य ममअङ्ग, अष्ट अंगुलमय दरशत। द्वादश अंगुल पुच्छ, बाहुअति लघुतर सरसत ॥ अति अमित अगाध अपार है, रतनाकर किहि बिधि तरत । यह सुनतराम बिस्मित भये, जाम्बवान तब उच्चरत ३ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ देव मारुती यहै रुद्र अवतार है। करहु रुद्र को तवन धीयं निजधार है॥ सुनत यहै बच स्वच्छरामनुति कीन है । हरिहां । कारज मोर अशेष आप आधीनहैं ४ मुद्रितमन जनि करहु कहावपु क्षुद्रहै । लसत रुद्र अवतार कितोक समुद्र है ॥ अघटित घटना घटन पटी यश पेखिये । हरिहां । लङ्का शङ्का कहा गिनतमें लेखिये ५ ॥ दोहाछन्द ॥ सुनत बचन श्रीरामके, हिय हरषे हनुमान। मनसि महामुद मानिकै, बदत प्रबल बलवान ६ ॥ मनोहरछन्द ॥ कूरम है मूल आलबाल तूल पाथोनिधि, दशौंदिशि शाखा सर्ब शोभाकी समाज है। पल्लव समान मेघ सुमन नक्षत्र सर्ब, सूर्य सोम फल दोऊ बिपुल बिराजहै ॥ कहै हनूमान स्वामि करुणानिधान सुनो, यहै व्योम वृक्ष मोर क्रम गतआजहै। सुनि कपिराजकी अवाज सियशोध काज, आयसु उचारी अवधपुर अधिराजहै ७ हुकुम चढ़ाय शीशबोले पुनि हाथजोड़ि, इहिकी खुलासा खूब स्वामि सुनि पाऊँमैं। लङ्का इत लाऊँ जम्बूद्वीप लेइजाऊँ उत, अथवा अशेष अम्बुसागर सुखाऊँ मैं ॥ किंवा कैलासमेरु मन्दर बिन्ध्याद्रि आदि अद्रिन उखारि सेतु

बन्धन कराऊँमैं । येहो परिपूर्ण प्रभू कीजिये हुकुम तूर्ण, सीय इत लाऊँ लङ्का चूर्णकरि आऊँमैं ८ राजन के राज महाराज अधिराज राम, रावरी रजायसु यथैव सुनि पाइहौं । शोषिहौं समुद्र क्षुद्र लङ्काको अलङ्का करौं, लङ्का अधिपाल बेगिबांधि इत लाइहौं ॥ पतिब्रत मानकीर्ण जानकी ले आऊँ नाथ, अंघ्रिप उखारि अद्रि ओघन उठाइहौं । सागर पटाइहौं हटाय बारिनिधी बारि, दुष्टन दटायकै अ-रिष्ट उचटाइहौं ९ कहिये कृपानिधान होतहै बिलम्ब मोहिं, मारतण्ड बंशके बिभूषण अखण्डहै । संयुत प्रकारसबिहार तोरणादिसह, लङ्का लाऊँ इतै के तितेई करौं खण्डहै ॥ युद्धकाज क्रुद्ध ह्वै समुद्धत सकल सैंन्य, सबको उठाय तितजाय करौं मण्डहै । कछूहू असाध्य नाहिं सकल सुसाध्यमम, परम प्रचण्डचण्ड मेरे दोरदण्ड है १० ॥ सोरठा छन्द ॥ सुनि मारुत बरबोलि, श्रीरघुबर प्रमुदित भये । मञ्जुमुद्रिका खोलि, पवनसुवन अर्पणकरी ११ लङ्घन करहु समुद्र, सिय बिसास दे मुद्रिका । पुनि इत आवहु रुद्र, मोजीवत अविलम्ब अति १२ तब तथास्तु हनुमन्त, कहि गहि मञ्जुल मुद्रिका । किय बन्दन अगि-नन्त, श्रीरघुबर सुग्रीवसह १३ पवनपुत्र बड़बीर, चपलचले बहुबेग ते । पतितरंगिनीतीर, चितवत किय चित चिन्तवन ॥ १४ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे पवनपुत्रप्रयाणो नामैकोनविंशोल्लासः ॥ १९ ॥

कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ दूरतिक्रमक्रम मिलित, घूर्म ऊर्मी मर्मच्छिद । युतरज भरकादम्बककुभ रुन्धत गुरुगति भिद ॥ गाढ़ाम्रेडन रूढ़, घटाघन संघट्टनकरि । नील व्योम सुर सरित, अम्बुकण गहत धायधरि ॥ अति ऐसे झंझा बात ये, करत घोर घनघातहै । अवलम्बि धैर्यधिय रैवसंनंक्षुत, सज्जकियो सबगातहै १

प्रोद्यतकृत लांगूल,स्फालकेलीकरि व्याकुल। भये गगनचर अखिल पुच्छफटकार छटाकुल॥ स्तम्भित अक्षि प्रकाशज लग्निजलचरवा चालित। भयेभूरि दिगभागवीर लङ्घत जलनिधिजित॥जङ्घालचंड उड्डीन अति,खगपति अङ्गीकृतकियो। मनमगन गगन मगसंच-रत,हनूमान हरषितहियो २ पुच्छकेतु उत्ताल,नभसि पृथुगति अङ्गी-कृत। अभ्र द्विधा उत्पतन, पृष्ठ कृष्टोग्र सत्त्वधृत॥ उरुबेग उच्छलित, पयोनिधि ललित लहरकिय। अरुण अङ्गरुचिपूर, दूर सिन्दूर छटा लिय॥ अतितेजभाग करिकै सकल, दिक्करि कटितट अरुणकृत। ते सूर्य विद्ध अम्बुदसदृश,अति उत्तम उपमानभृत ३॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ उहि अवसर आयो उतै, हिमगिरि सुत मैनाक। कह्यो मो पर विश्रामगहि, गमनकरो पुनि नाक ४॥मनोहरछन्द॥ प्रेरित पयोधि रत्नाभ कलकांचनाग, सुवनहिमाद्रिमइनाक नाम धेय है। बचन उच्चारत भो आये दूर अध्व आप,सुन्दर शिखर मोर अत्रश्रम हेय है॥ सुनि गिरिबाच अग्र अंगुली लगाय ताहि,चले अग्र उग्रगति मारुति अगेय है। भुजरय पौनपुञ्ज पूरित ककुभकरि, आञ्जनेय अरिन अजेय मग श्रेय है ५॥चन्द्रायणाछन्द॥ माला शालतमाल तालगण जालहै। बेलातट मारुती लखत सुबिशालहै॥ बल्लभ कल्लोलिनी तूर्ण मुल्लंघयन्। परहां। उच्चबालधी बल्लिगगन मुल्लोलयन् ६ ॥षट्-पदछन्द॥ अथ दशरथनृपसूनु, अमल आयसु करिकायो। बन मंक्षिकसम रूप, पुरीलङ्का लखि पायो॥ पवनपुत्र हनुमान, अव-तरत शिंशप अगहै। मात्रा परिमित देह,जाहि जान्यो नहिं जगहै॥ जानकी अग्र उत आयकै, अभिवन्दन अगणित करत। करअंगु-लीय रघुनंदकी,धरणिसुता सम्मुख धरत ७ जनकनन्दिनी जननि, कौन तू हो शाखामृग। कौन पठायो तोहिं, रामपठयो इततवढिग॥

यहै कहा तव हाथ, मुद्रिका तिनके करकी । तोहिंदई यह नाहिं, निशानी है निज बरकी ॥ जबलई जानकी प्रेमयुत, हृदय लगाई सहित हित । रोमांच कलेवर संचरे, नयननीर बरसत अमित ८ ॥ दोहाछन्द ॥ आंखिनतें अबिरल गलत, अश्रुन ओघ अमाप । सुबरणकी जानी नहीं; तब मारुति कह आप ९ ॥ नगानिकाछन्द ॥ सुबर्णकी सुबर्णकी सुबर्णकी सुबर्णकी १० ॥ सोरठाछन्द ॥ अवनि अंगजा आप, कछु आशा उरआनिकै । पोंछे अश्रुकलाप, मुद्रिकसों बूझनलगीं ११ ॥ षट्पदछन्द ॥ अरी मुद्रिका कहहु, कुशल सह श्रीरघुनन्दन । कहु कुशली है लच्छ, स्वच्छ चितसरसत चन्दन ॥ सुन स्वामिनि युग भ्रात, कुशलपै तव चिन्तातुर । बिरह न दीजै देव, यहै अभिलाष रहत उर ॥ सिय तव बियोग जबते छयो, मुद्रिक अभिधा भाजिगयो । प्रभु करमधि धारण करत, नित नामधेय कङ्कण भयो १२ इहिमुद्रिक मणि मध्य, पीउ प्रतिबिम्ब बिलोकत । करौं दरश अस आश, उरसि चितदे अवलोकत ॥ निज प्रतिबिम्ब निहारि, अमित उर अचरज आयो । प्रभु मनमेरो ध्यान, धरत सोही बपुपायो ॥ तद्रूपतनकहू ना लखत, पेखिपरत मद्रूपहै । भ्रमभूरिभयद भ्राजन्त मन, सुता जनकपुर भूपहै १३ ॥ कबिरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ पुनि कछु चेतन पाय कहत हनुमानते । अति कृश पिय बपु जान परत अनुमानते ॥ मुद्रिक कङ्कणभई अवर कहिये कहा । परहां । दारुण दशा बियोग रची है विधिमहा १४ तब बोले हनुमान युगल करजोरहै । पहिलेही कृश परम बिरह पुनि तोरहै ॥ प्रतिपद तिथि नर पढ़त तासु बिद्या यथा । परहां । पावत तनुताकन्तकलेवरहै यथा १५ ॥ षट्पदछन्द ॥ पुनि बैदेही बदत, बिरह मंधि कछु न सुहावत । दिनकर समदीधिती, सुधांकर दृग दरशावत ॥ पङ्कज

लगे फुलिङ्ग, कुलिश कर्पूर परसहै। शम्पासम शशिकला, वायु बड़वानल जसहै॥ मनुमलयज दावानललगंत, बहुबियोग दुख गाइये। संदेश मोर गहि रामढिग, अबिलम्बित उतजाइये १६॥

हनुमानुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ कछु न राम शरदूस्मात मनमानिये। हरियूथप दुर्गम्य कछु न पहिचानिये॥ कुपित सलक्ष्मण स्वामि रक्षकुलहै कहा। परहां। सानुकूल तव देविदैव प्रमुदितमहा॥१७॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासेमारुतिमैथिली-संवादोनामविंशोल्लासः॥२०॥

कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ एते पै सप्रपञ्च, पवनसुत पूछनलागे। राजवाटिका कहां, मात कह पश्चिमभागे॥ धास्यो रूपं प्रचण्ड, पुच्छ फटकारि गयेतित। लीलावन उत्पाटि, कियो मधुफल भक्षणजित॥ अभिधान अक्ष रावणसुवन, मास्यो परिघाघातहै। तिहि क्रोध अरुण लोचन किये, मेघनाद दरशातहै १ ब्रह्मदत्त ब्रह्मास्त्र, चलायो मेघनाद जब। रुद्ररूप मारुती, ऊपरै बृथाभयो सब॥ इन्द्रजीत उर आनि, अमित बिधि निन्दाकीन्ही। तबै बिधाता पवनपुत्र, नुति कृतिचितचीन्ही॥ चुनि चारुचतुर्मुख बिनयते, आये बन्धनबीचहरि। बानर बिलोकि रावणतदा, बोलत रचना बचनकरि २ रे बानर तू कौन, अरेहौं तवसुतहन्ता। खण्डखँडन श्रीराम, दूत अभिधा हनुमन्ता॥ मम दोर्दंड कठोर, ताड़नाद्भुत गतिसोहै। त्रिकुटाचल हैं कहा, मेरु का तू पुनि कोहै॥ कोदण्ड भगत दीक्षा गुरू, अवध अधिप अधिकायते। लङ्केश निशाचरनाथ तू, कहा कोटि कीटामते ३॥ चन्द्रायणछन्द॥ कुपितहोय लङ्केश चलायो खग्गहै। कट्यो न कपिकों केश सुमन जिमि लग्गहै॥ सज्जन मैत्री यथा नाहिं उच्छिन्नहै। हरिहां। तथा श्वसनसुत बपुष भयो नाहिं भिन्न है ४

शणवेष्टितकरि बहल चलंचयतूल है। तेलप्लुतद्रुत कियो ललित लांगूलहै॥ दनुज करत देदीप्यमान दरसन्तहै। हरिहां। हेरिहेरि हनुमन्तहीय हरसन्तहै ५ सिया हिया अकुलाय कहत बरबैनहै। चित चिन्तातुर महातनक नहिं चैनहै॥ अरजी अनल चुनन्त अनिलसुत कारने। हरिहां। सुहृद सुवन जियजानि कृपाकफधारने ६ आज्य होमकरि कियो राम तुहिं तुष्टहै। परुषबचन सुनि विप्र भये नहिं रुष्टहै॥ पतिभक्ती करि युक्त मोर जो चित्त है। हरिहां। हूजोशीतल मद्य मरुत के मित्त है ७॥ सोरठाछन्द॥ शीतल भयो हुतास,सुनि सियकी पट्टप्रार्थना। हनुमतहीय हुलास,चारुचन्दनालेप सम८॥ मनोहरछन्द॥ निपट निशङ्क लङ्कगढ़को दहन कियो, बानरके पुच्छ पायो जन्म अग्नि आप है। ज्वाला आसमानलौं बिकासमान भासमान, दशौं दिशि पूरिरहीं अम्बरअमापहै॥ आसुरी असुरबाल वृद्ध तरुणादि सब, व्याकुल बिशेषहाय अखिल अलापहै। मनो राम चापशर दापके संताप तप्त,स्वर्गभो पलायमान रावण प्रताप है ९॥ चन्द्रायणाछन्द॥ पलभक्षक पल भक्षिहुताशन प्रबलहै। परम प्रास संतृप्तिभयो अति चपलहै॥ गिस्यो अम्बुनिधि बीच जासप्रतिबिम्बहै। अरिहां। मानोपिवत अति तृषित तितै अब अम्बु है १० दशग्रीव उहिबार करत सुबिचारहै। हनूमान बराबिदित रुद्र अवतार है॥ हौं भ्राजत भव भक्तनगर मम किमि दह्यो। परहां। इहिको कारण यही चारु चितमें चह्यो ११ दश शिरकरि दशरूप भये संतुष्ट है। एकादश अवशेष भयो यह रुष्ट है॥ पंक्तिभेद कल्याण कौनको देतहै। हरिहां। नगरदाह हनुमान कियो इहि हेतहै १२॥ पद्पदछन्द॥ बड़वानलकरि सिन्धु,बिम्ब दिनमणि करिअम्बर। चपलाचयकरिलसत,कहा अति मेघाडम्बर॥ भालनेत्र भ्राजन्त,तथा नहिं शशिभूत

करहैं। प्रलयानल करि काल, इन्द्रधनुधाराधरहै ॥ इमि ध्रुवमण्डल करि मेरु गिरि, तस शोभा नहिं लहतहै। देदीप्यमान कपि पुच्छ करि,अनुपम उपमा गहतहै १३ मन्दमन्द गिरि कहत,निशाचर नगर निवासी। मरुतपुत्र इक यहै, पुच्छ ध्वज गगनबिलासी ॥ रक्षा मणि कपि कटक, अहह इत पीछो ऐहै। चीन्हि चीन्हि के सकल, दुसह दारुण दुख दैहै ॥ इहिं एक कियो उतपात अस, अगणित बानर आयहैं। अति हाय हाय घबराय, घट कहा कहा दुखपाय हैं १४ नभमण्डल थितहोय, कहत कपिवर दशमुखसों। हौं इकतू कोटीश, तदपि तुहि जीतौं सुखसों ॥ जनकसुता जानकी, लेव जावो तित अतिद्रुत। सबप्रकार समरत्थ, स्वामि मुहिं दिय न हुकुमउत ॥ सुग्रीव अग्र रघुवीरवर, भुज उठाय ऐसे कही। क्षणमध्य छपाकर निकरयुत, रावणहौं हनिहौं सही १५ ॥ दोहाछन्द ॥ इमि कहि लङ्का भस्म करि, बनिकाशोक बिहाय। अभिज्ञान याचन करत, श्रीजानकि ढिगजाय ॥ १६ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्कजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे लङ्कापुरदहनो नामैकविंशोल्लासः ॥ २१ ॥

कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ काल व्यालबर वधू सदृश बिलसन्तहै। धूमशिखा सम शत्रु शिखा सरसन्तहै ॥ शिरोरत्न सियलेय दियो हनुमानहै। परहां। अभिज्ञान यह एक सु प्रथम पिछानहै १ चित्रकूट गिरि काककलेवर धारिकै। शक्रसुवन मम गयो सुहृदय बिदारिकै ॥ ईषिकास्त्र करि कियो तस्य चखकान है। परहां। श्रीरघुवर को देउ द्वितीय अभिज्ञानहै २ मनशिला मम तिलक सुललित कपोल में। कियो पाणितल मृष्ट करहु जिय तोल में। यँह तीसर अभिज्ञान पीउप्रतिं भाषिहौं। अरिहां। जीवन अवधी

मासमात्रकी राखिहौं ३ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ जलयुक्त गहि रत्न, प्रमुख अभिज्ञान अनूपम । अभिवन्दन किय जनकनन्दिनी पद बारिजसम ॥ आय उदधितट आप, अटन अम्बर मगकीन्हो । आडम्बर भुज प्रबल, पराक्रम अद्भुत चीन्हो ॥ हनुमन्त महामतिमन्त अति, साधि स्वामि कारज सकल । अति सत्वर उत आवत भये, जित रघुबर बिलसत बिकल ४ ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ मारुत चुम्बित चारु केसरा लसतहै । प्रमुदित ताराधीश अग्रशर दृशतहै ॥ बिस्हित रामालोक सुआतुरवन्तहै । हरिहां । आयो यहै बसन्त किधौं हनुमन्तहै ५ ॥ दोहाछन्द ॥ सीतापति सम्भ्रम सहित, आलिङ्गत अवलोकि । बिनवत युग करजोरिकै, बारम्बार बिलोकि ६ ॥ हनुमानुवाच । षट्पदछन्द ॥ पियो नाहिं अम्बुधी, नाहिं लङ्काचुर नीता । रावणशिर लायो न, नापि सीता आनीता ॥ आश्लेषार्पण पारि, तोष कारण किहिंपाऊं । लखि प्रभु प्रभुता परम, अनुग निज जीय लजाऊं ॥ बिभुवार्त्ताहारक दूत मैं, युत सँदेश इतउत कहौं । किहि लायकहौं करुणानिधे, आलिङ्गन कैसे चहौं ७ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ रामकहत विकलपसहित, एरे कुटिल बिभात । कहा कहा करिहै अहौ, सो जानी नहिंजात ८ ॥ हनुमानुवाच । षट्पदछन्द ॥ कितै अयोध्यापुरी, अवर पुनि रामभद्रकित । तेऊ दशरथ बचन, पाय आये दण्डकइत ॥ कौन दुष्ट मारीच, कनकमय मृग अति अद्भुत । कुत सीता अपहार किलैमैत्री कपिपतियुत ॥ मुहिं कित सीताकी शोधको, पठयो श्रीरघुबर तितै । अति क्रूरकर्म सुबिभात यह, अघटित अघटित कृतइतै ९ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ रामरस्त बिदरत हृदय, प्राणचहत परलोक । तूरन आवेदन करहु, जिमि जानकि अवलोकु १० हनूमान सत्वर बदत, जगदानन्दक राम । तोर

प्राणगति द्वारकी, अर्गलकर अभिराम ११ इमिकहि अर्प्यो शिर रतन, तिलक मृष्टचखचूर्ण। चित्रकूटगिरि शिखरंपर, सो बरण्यो सम्पूर्ण १२ रामपाय अभिज्ञानत्रय, साधु साधु कह बैन। प्रियाकुशल पूछनलगे, जलभरि नीरजनैन १३ ॥ हनुमानुवाच । षट्पदछन्द ॥ कृशता बरणनकरौं, शशिकला प्रतिपद थूला। पठिये पुनि पाण्डुता, मृणाली मेचकतूला ॥ अश्रुओघ उच्चरौं, अम्बुनिधि अलप लगत है। लखत सीय सन्ताप, हुताशन शीतपगतहै ॥ लावण्य शेष बपु लगत वह, हिय रावर स्मृतिमात्रहै। हनुमन्त कहत सुनिये प्रभो, केवल करुणापात्रहै १४ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ प्रभु पूछत हनुमन्त पुनि, लङ्कापुर के बीच। कहा कथा किय कर्णगत, कहहु उच्च अरु नीच १५ ॥ हनुमानुवाच । षट्पदछन्द ॥ नाहिं कथा शृङ्गार, कुतूहल कथा नाहिं कित। नहिं साङ्गीतक कथा, कथा विज्ञान जितै तित ॥ नाहिं करिन की कथा, तुरंगम कथा तथा नहिं। नाहिं धनुप की कथा, बिशिखआदिकन कथाकहिं ॥ सुन नाथ निशाचर नगर मध्य, स्वपनहुं मधिनाहिं अन्यथा। भयभीत रावरे भूरिमन, प्रबल पलायनकी कथा १६ ॥ श्रीरामउवाच । दोहाछन्द ॥ त्रिदशन करि दुर्द्धर्ष अति, लङ्कापुरी महान। विद्यमान दशकण्ठके, किमि जारीं हनुमान १७ ॥ हनुमानुवाच ॥ सीताके बिश्वासकरि, कियो लङ्कपुर दाह। पहलेही वह दग्धही, कोपानल नरनाह १८ इक शाखाते कूदिकै, शाखान्तर पै जाय। शाखामृग को ज़ोर यह, रञ्च न अधिक लखाय १९ सागरको उल्लंघिबो, तथा लङ्कपुरदाह। रावर पूर्ण प्रभाव भल, निरखिलेउ नरनाह २० ॥ कविरुवाच ॥ लङ्कामधि शङ्का सहित, शरमाप्रति सियबैन। कीटभ्रमरके न्यायकरि, पिय बपु मरिबनैन २१ ॥ शरमोवाच ॥ तू गहिं है जो पीयबपु, पिय बनिहै

तनुतोर । होहिं युगल बिपरीत रति, यामधि कहो निहोर ॥ २२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे हनुमद्विजयो
नामद्वाविंशोल्लासः ॥ २२ ॥

हनुमन्नाटकेषष्ठोङ्कः ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ पवनपुत्र जब जाय, कही कपिपति ते ऐसे । राज्य गर्बकरि बिसरि, गयो प्रभुकारज कैसे ॥ बालीदशा बिसारि, दई सब भूल्यो निजदुख । पूरण रामप्रभाव, अनुभवत इत सारेसुख ॥ सुग्रीव सुनत मारुत बचन, सकल सैन सह संचरत । परिहारि प्राणप्रिय प्रेयसी, समरबीरता धियधरत १ बिजय दशमि आसौज, बिशददल श्रीरघुनन्दन । कियो प्रबल प्रस्थान, निखिल निशिचरन निकन्दन ॥ बल अष्टादश महा, पद्म संख्या कस बलहै । यूथनाथ ये कहे, अपर कपिसंख्य प्रबलहै ॥ बहु व्याप्त भयो भूतल सकल, दिशाबिदिश आकाश है । कपि कटक बिकट कटकटत रद, किलकिल शब्द प्रकाशहै २ हनूमान कह सुनहु, निखिल नरनाथ मुकुटमनि । आवत यह चहुँओर, अमित कपिकटक अनीकनि ॥ जिनके भाराक्रान्त, भूमिमज्जत तिहि भरकरि । दशन कटंकरि लिखत, शेष अहिकमठ पीठपरि ॥ उत्पतत पतत ज्यों ज्यों प्लवङ्ग, त्यों त्यों नमतरु उन्नमत । फणिराज प्रयाण प्रशस्ति लिखि, फेनपुञ्ज अविरत वमत ३ रुन्धित सन्धी सन्धि, श्वास उर्मिन करि अबिरत । हारावलि गलछन्न, रत्न अदयालु अमितश्रुत ॥ कीन्हों फल भञ्जिका, भङ्गक्रम परम परिश्रम । श्रवणाकाश निरन्तराल शिरस्तब्ध भुजंगम ॥ ध्रुव धारत धरणीधीर धरि, भुग्न भयो भासन्तहै । बानर सुबीर बिक्रमनभर, तरलताप त्रासन्तहै ४ रटतरामभो मरुत, सूनुसुनि लीजै सत्वर । क्लेश करनको कूर्म, ककुभकुल थगित निखिलकर ॥ धराधरन भूजन्त, धूलिभर सिन्धु कर्दमित । रजकरि रुन्धतगगन,

कटक कपिकेर अपरिमित ॥ नासीर पुरःपुर प्रचुरबल, बागाडम्बर बहुलसत। पै जानतहौं यह मोर सब, बिजय तोर भुजबल बसत ५ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ अति अद्भुत कपि कटक लखि, भिल्लभामिनी भूर। बदत बचन परिहासयुत, निरखत सैनानूर ६॥ षट्पदछन्द॥ नाहिं शस्त्रकित लखत, न कछु अस्त्रन अवलोकत। नाहिं रथनकी कथा, वाहबारण न विलोकत ॥ नाहिं वृषभ नहिं सुतर, शिबिर नहिं नृपहु जटाधर। वित्तनाहिं बर बसन, नाहिंनृप रचन छत्राधर॥ भाषत जरठ भिल्लीन सों, हम बैठी इतप्रातहै। सुनि कहत सकल समुझायकै, तिनकीते सब मातहै ७ लङ्कागढ़ जेतव्य चरण, तरणीय जलधि जल। प्रबल शत्रु पौलस्त्य, सहायक इतमरकटबल ॥ यदपि राम यह एक, सकल रिपु प्रतिबल दलिहैं। निशिचर निकर निशेष, पराभव पावत पलिहै ॥ कहि क्रिया सिद्धि सब सत्त्वमधि, महतजनन की मानिये। आडम्बरहै उपकरनको, यह अवश्य उर आनिये ८॥ कवि-रुवाच ॥ अत्रान्तर वृत्तान्त, तत्र लङ्का लीजै सुनि। मन्त्रशाल उपविष्ट, मन्त्रिप्रोच्छ्राहित चित चुनि॥ बरत बिभीषण बचन, सहित उत्कण्ठ भटनप्रति। स्वर्णपुंख शित बिशिख, बज्रसम मनो बायु-गति ॥ जबलौं न गहैं शिर सबन के, तबलौं है कर्त्तव्य यह। द्रुत दशरथनन्दन दीजिये, निमिनृप नन्दिनि मोदमह ९॥ मनोहरछन्द ॥ त्रिबरग धर्म अर्थ काम ये कहावत हैं, मोक्षको मिलाय चतुर्बर्ग पहिंचानिये। धारिये धरम प्रातहीते मध्यद्योस जौलौं, उत्तर अहनि अर्थ संग्रह सुठानिये ॥ सायंकाल समै काम सेवन यथेच्छ कीजै, गावत गोबिन्द श्रुति बचन प्रमानिये। मोक्षहै महान जिय जानहु जहान बीच, आठौ याम सो अवश्यमेव उर आनिये १० ॥ सोरठा छन्द ॥ अर्पहु सीता राम, कहत बिभीषण भ्राततें। नय धारहु धिय

धाम, अनय किये बिनशत सकल ११ ॥ षट्पदछन्द ॥ पुनि रावण प्रति कहत, यहै नर बानर जाती। इनते रहिये डरत, बड़े ये सब उत्पाती ॥ हयहय महिपति मनुज, बसे कारागृह अन्दर। निबसे जाकी कक्ष, वहे बालीहो बन्दर॥ पौलस्त्य करतहौं प्रार्थना, रघुबर सीय समर्पिये। बन्धनागार थित बिबुधगण, तिन बिसर्जि सन्तर्पिये १२॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ किल नाशक कुलकीर्त्ति कोप तजिदीजिये। बहु बर्धन यश बंश धर्म धियधीजिये॥ है प्रसन्न सब बचैं काज सो कीजिये। हरिहां। दाशरथी श्रीराम मैथिली दीजिये॥ १३॥

इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्री.दूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्कजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासे बिभीषण सम्भाषणोनामत्रयोविंशोल्लासः॥ २३॥

रावणउवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ कह सकोप जानकीजीय जानन्त हौं। मधुसूदन रघुनन्द मनसिमानन्तहौं॥ बधजानत दशबदन तदपि थिर थप्पिहौं। हरिहां। मेरे जीवत राम सीय न समप्पिहौं १॥ दोहाछन्द ॥ रावण ऐसे बचनकहि, कृतबामांघ्रि प्रहार। तबै बिभीषण गमन किय, लिये सचिव सँगचार २ महातङ्क लङ्कानगर, धूमकेतु निजबंश। छांड़ि बिभीषण तूर्णतिहिं, चल्यो हुलसि हिय हंस ३ बिबिध बिराजित नितहुते, श्रीरघुनन्दनराम। तितअति तूरन आयकै, चितपायो बिश्राम ४॥ षट्पदछन्द ॥ लखत बिभीषणभाव, परस्पर बानर उचरत। करि है लङ्काधीश, प्रणति पदपङ्कज प्रचरत॥ जिमि कीन्हों सुग्रीव, सकल मर्कटभट राजा। तैसे याहि अधीश, अरपिहैं असुर समाजा॥ इहिसाखी तुम हम सकल, है यामें संशय नहीं। अतिउर उदार दातार तर, श्रीरघुनन्दन हैं सही ५ ॥ दोहाछन्द ॥ जो बिभूति दशग्रीवको, शिरछेदे शिव दीन। राम बिभीषण कोदई, दरश होत लघुचीन ६ प्रणंभि चरण बारिज बरण, पुनिवर

आयसु पाय। निकट बिभीषण थित भये, अबिलखि उर न अघाय ७॥ षट्पदछन्द॥ अथ सौमित्री मित्र, पुत्र दशरथ नरनायक। उत्तर तट अम्भोधि, भये थित जन सुखदायक॥ गर्भ दर्भ आकीर्ण, अमल उपवेशन ऊपर। बैठे रघुबरराम, अपर सब भ्राजत भूपर॥ आयो न अग्र जब अम्बुनिधि, तब अति कोपारुणं बरण। आग्नेय अस्त्र आदत उन, सिन्धु सलिल शोषण करण ८॥ कविरुवाच। चन्द्रायणा छन्द॥ रामचन्द्र दशबदन नाश उद्यम कियो। मांसाहारीजीव महामन मुदलियो॥ मृग कपि बन अरु बैश्य तपोधन आदिकी। अरिहां। महाभित्रता मानिलईजु अनादिकी ६॥ षट्पदछन्द॥ होतो नहिं मारीच, हिरन बञ्चन को करतो। हनुमत कपिबिन कौन, कहै मनसंशय हरतो॥ सघन महाबन बिना, सीय हर रावण कैसे। बिन तपसी के शाप, सबै बानक किमि ऐसे॥ ये सुहृदवर्य हमरे सबै, परम कृपा इन प्रापहैं। अब करिहैं अदन अघायकै, आमिष असुर अमाप हैं १०॥ कविरुवाच। सोरठाछन्द॥ अति भयसंयुत सिन्धु, सुरबपु धरिआयो उतै। राम दीनजनबन्धु, तवन करत कर जोरि युग ११॥ समुद्रउवाच। षट्पदछन्द॥ पूर्व पितामह सगर, आप निश्चय अनुमान्यो। हूहै हमरे गोत्र, नृपति दशरथ जगजान्यो॥ हयमख करिहैं वहै, आज्य आहुति बहु परिहैं। ब्याकुल हूहै कमठ, शेष किमि धरणी धरिहैं॥ तिन ताप शमन सागर सकल, सुरसरि संयुत प्रकट कृत। थिरथपै तिन्हैं उथपत अबै, अनुचित उचिंत न धीयद्युत १२॥ श्रीरामउवाच। दोहाछन्द॥ चापल्याउ सौमित्रि मम, शोषौं सागरनीर। चरणनं ते चलिजायँगे, बिन श्रम बानर बीर १३॥ कविरुवाच॥ तबै बिनय किय तोयनिधि, जो है बन्धन सेतु। युग युग लौं जाहिर रहहि, जगमधि कीरति केतु १४ सुनि बारिधि के बचन

बर, हुकुम दियो श्रीराम। करत सेतु रचना रुचिर, बानर नलअभि-
राम १५ ॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ तिरत देखि प्रस्तरन, मरुतसुत
बचन उंचारत। बड़ अचरजकी बात, प्रभो प्रत्यक्ष प्रचारत ॥ पाहन
डूबत आप, अवर संगीन डुबावत। इहां तिरत सबतेपि, अपर सह-
चरन तिरावत ॥ यह ग्रावनको गुण है नहीं, बारिधि बानर को
तथा। रावर प्रताप महिमा लसत, इतरन की इत का कथा १६ ॥
चन्द्रायणछन्द ॥ प्लवग पुरोगम सिन्धुसलिल मय देखिया। तिन
पाछे कपिकटक पङ्कमय पेखिया ॥ उनहूँ के पश्चात भाग बानर
रहे। हरिहां। जलधि हुतो इहिठौर बचन ऐसे कहे ॥ १७ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसेतुबन्धनन्नाम-
चतुर्विंशोल्लासः ॥ २४ ॥

हनुमन्नाटकेसप्तमोऽङ्कः ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ गिरिसुबेल तट कपि
कटक, युत उतरे रघुबीर ॥ उर अनुकम्पा आनिकैं, उचरत गिरागँ-
भीर १ ॥ श्रीरामउवाच ॥ महाबीर अङ्गदबली, तुम रावणढिग जाउ।
प्रथम साम कर्त्तव्य है, सो करि द्रुत इतआउ २ ॥ षट्पदछन्द ॥ उभय
बन्धु असमच्छ, होत तैने हरिसीता। आधिपत्य अहंकार, मत्त अ-
थवा आनीता ॥ ताहि दीजिये तुरत, नतर लक्ष्मण मार्गन गन।
करहिं असुर उच्छिन्न, उच्छलच्छोनित क्षितिघन ॥ सह पुत्र पौत्र
परिजनसहित, अन्तकपुर प्रतिजायहौ। जउ बीसश्रवण चष बीस
तउ, बधिररुअन्ध कहायहौ ३ ॥ कविरुवाच ॥ कहि तथास्तु युवराज,
पितृबध बैरबिसर्जित। चल्यो चपलगति लङ्क, उरसिरिपुशङ्क बि-
वर्जित ॥ गगनाङ्गन उत्पतन, करत किलकिलरव करि करि। प्रबल
पुच्छ फटकार, उच्च धाराधर धरि धरि ॥ उतपात केतु उद्धट असुर,
सिंहासन आसीनत्रहि। उपमान अमित अङ्गदलसत, निर्जरपति

सुत सुवनसहित ४ ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ मालुमकरी प्रहस्त रामको दूत है। आवन चाहत इतै कोपि कपिपूत है ॥ आयसु असुराधीश दई अन्दरगयो। हरिहां । अवलोकत आकाश बचन उचरतभयो ५ ॥ अङ्गदउवाच । षट्पदछन्द ॥ रे कौनपकुल कहौ, कौन रावण अभिधाना। रतनरवीन्दू बंश, हरनकरि नष्ट निदाना ॥ त्रिजगदहन त्रयनयन, त्रिशिष शूलहुते अतुलित । प्रलयानल प्रभु राम, असुरहूहै पतङ्ग तित ॥ चितचाहत जो तुमरो भलो, उत्तमबात बतात अब । सीता समर्पि सन्तर्पिये, घटिजैहै घनघात सब ६ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ साभ्य सूय रावण रटत, अङ्गद उत्तरदेत। भय उक्ती प्रत्युक्ति युत, उत्तम उपमालेत ७ ॥ अन्योन्यभाषण । षट्पदछन्द ॥ रेकपि तू है वही, कौन जो पहिले आयो । जाकी जारी पुञ्ज, तनय मम जाहि बँधायो ॥ ताने तो तित कही, निखिल लङ्कापुर जाख्यो । मारुयो तव सुत अक्ष, मुधा कपिबचन उचाख्यो ॥ यह झूठ बात कै सत्यहै, कोप लाज भय युतभयो । अङ्गद बरिष्ट बरबैन सुनि, रावण मुख मुद्रितरयो ८ पुनि रावण बूझत, अरे कपिगुण कहतावक । रामराज लेख्यार्थ, दूरप्रापक बहुधावक ॥ लङ्कादाहक हनूमान, वह कहहु कहां अब । राक्षस सूनू बद्ध, श्रवण सुनि तित ताड़ित सब ॥ भासत जितै सब्रीण अति, परम पराभव पाय कै ॥ वह कोजाने किहि ठौर है, कितमें रह्यो लुकायकै ९ जिहि कपिकिय पुंरदाह, अवर कानन कृत भञ्जन । गिरि दरि असुरन भरी, अक्ष सुत कीनो गञ्जन ॥ तुम जानतहो ताहि, कछू वह करिहै बिनती। पै हमरे इहि कटक, बीच ताकी नहिं गिनती ॥ वह दूर दूर धावन बिषे, बिदित बड़ो मजबूतहै । सन्देश इतै उत भेजबे, ल्यावन कारन दूतहै १० लङ्का दई जलाय, अक्ष तवसुत संहाख्यो । अरु पुनि